Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद : अत: वे लोग जो ईमान लाए और नेक-आमाल बजा लाए तो वे उनको उनका भरपूर प्रतिफल प्रदान करेगा और अपने फ़ज़ल से उनको मज़ीद देगा।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 6
अंक- 22

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

मूल्य 575 रुपए वार्षिक

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

21 शव्वाल 1442 हिज्री कमरी 3 इहसान 1400 हिज्री शम्सी 3 जून 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

जनाज़े का सम्मान चाहे जनाज़ा ग़ैर मुस्लिम का हो

(1311) हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्हों ने कहा कि हमारे पास से एक जनाज़ा गुज़रा। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस के लिए खड़े हो गए और हम भी खड़े हो गए। हमने कहा : हे रसूलुल्लाह! यह तो यहूदी का जनाज़ा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : जब तुम जनाज़ा देखो तो खड़े हो जाया करो।

(1312) अबदुर्रहमान बिन अबी लैला से रिवायत है कि हज़रत सहल रज़ियल्लाहु अन्हु बिन हनीफ़ और हज़रत केस रज़ियल्लाहु अन्हु बिन साद दोनों क़ादसिया में बैठे हुए थे, इतने में उनके पास से (लोग) जनाज़ा लेकर गुज़रे। वे दोनों उठ खड़े हुए। उनसे कहा गया : यह जनाज़ा इस देश के रहने वाले अर्थात ज़मियों (इस्लामी राज्य में गैर मुस्लिम नागरिक) में से है। उन्होंने कहा : नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से एक जनाज़ा गुज़रा और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हो गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा गया : यह यहूदी का जनाज़ा है । आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क्या यह रूह वाला (इंसान) नहीं?

(सही बुख़ारी भाग 2 किताब जनायज़, प्रकाशन 2006 क़ादियान)

अरबी भाषा सीखें क्योंकि अरबी भाषा के बिना कुरआन का मज़ा नहीं आता।
आदमी के लिए अनिवार्य है कि तौब: तथा इस्तिग़फार में लगा रहे और देखता रहे कि ऐसा न हो, बुरे कर्म सीमा से गुज़र जाएं और ख़ुदा तआला के क्रोध को खींच लाएं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ख़ुदा तआला श्रद्धा तथा मुहब्बत को देखता है

ख़ुदा तआला की दृष्टि श्रद्धालु इंसान के दिल के एक बिन्दु पर होती है जिसे वह देखता है और जानता है कि इस के लिए वह पूर्ण दिल की प्रसन्नता से हर कष्ट,जबर को बर्दाश्त कर लेगा। यह आवश्यक नहीं कि कोई बड़ी बड़ी चेष्टाएं करे और सदैव प्रसन्न रहे। हम देखते हैं कि सफाई करने वाला हमारे मकान में आकर बड़ा कष्ट उठाता है और जो काम वह करता है हमारा एक बड़ा सम्मान्नीय ,मुख़लिस दोस्त वह काम नहीं कर सकता,तो क्या हम अपने वफ़ादार दोस्तों को सम्मान वाला न समझें और सफाई करने वाले को सम्मान्नीय तथा इज़्ज़त वाला ख़्याल करें। कई हमारे ऐसे भी दोस्त हैं जो लम्बे समय के बाद तशरीफ़ लाते हैं और उन्हें हर समय हमारे पास बैठना उपलब्ध नहीं होता,परन्तु हम ख़ूब जानते हैं कि उनके दिलों की बनावट ऐसी है और वे इख़लास तथा प्रेम से ऐसे गूंदे गए हैं कि एक वक़्त हमारे बड़े बड़े काम आ सकते हैं। क़ुदरत के निज़ाम में भी हम ऐसा ही देखते हैं कि जितना सम्मान बढ़ जाता है ,मेहनत और काम हल्का हो जाता है। एक मज़कूरी को देख लो। परवानों के ढेर उसे दिया जाता है और एक हफ़्ता के अंदर आदेश है कि पूरा करके हाज़िर हो। बरसात हो, धूप हो, जाड़ा हो, गांव के रास्ते ख़राब हों। कोई बहाना सुना नहीं जाता और तनख़्वाह पूछो तो पाँच रुपए। और ऊपर वाले हाकिमों का मामला इसके बिलकुल विपरीत है।

रहबानीयत (सन्यास) सम्पूर्ण अनुभूति का माध्यम नहीं है

इस क़ानून से साफ़ स्पष्ट होता है कि ख़ुदा तआला का क़ानून भी अपने चुने हुओं से ऐसा ही है। ख़तरनाक तपस्याएं करना और अंगों और शक्तियों को चेष्टाओं में बेकार कर देना केवल निकम्मी बात और ला हासलि (इसतरह की बात जिस से कुछ प्रापत न हो) है। इसी लिए हमारे हादी कामिल अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया لَا رَهْبَانِيَّةَ فِي الْإِسْلَامِ अर्थात जब इन्सान को इस्लाम के गुणों उपलब्ध हो जाए, तो फिर रहबानीयत अर्थात ऐसी कोशिशों और तपस्याओं की कोई ज़रूरत नहीं।

(इसके बाद साधू साहिब तशरीफ़ ले गए और खाना रखा गया। हज़रत अक़दस ने फ़रमाया। कि:

यही कारण है कि इस्लाम ने रहबानीयत को नहीं रखा। इस लिए कि वह सम्पूर्ण मार्फ़त का माध्यम नहीं है।

10 अगस्त 1899 ई से **शेष पृष्ठ 12 पर**

अफ़सोस मुस्लमानों ने भी इस युग में ऐसी बात कहनी शुरू कर दी है और हज़रत मसीह को परिंदों का पैदा करने वाला क़रार दे दिया है

जिस बात का साहस मक्का के मुशरिकों को नहीं हुआ वह काम मुस्लमानों ने किस दिलेरी से किया, और नहीं सोचा कि इस बिना तर्क के दावा को कौन स्वीकार करेगा

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरः राद आयत 17 की व्याख्या में फ़रमाते हैं :

यह अजीब ख़ुदा की क़ुदरत है कि जितने लोगों को दुनिया ने ख़ुदा बनाया उनकी ज़िंदगी कष्ट और तकलीफ़ में ही गुज़री है। हज़रत मसीह को देश छोड़ना पड़ा और विभिन्न कष्टों का सामना हुआ। हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु तो शहीद ही कर दिए गए। राम चन्द्र जी भी कष्टों में ग्रस्त रहे। لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ में बताया है कि जब वे अपनी जानों की भी हिफ़ाज़त न कर सके तो तुमको क्या लाभ पहुंचाएंगे। هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ क्या अंधा और आँखों वाला बराबर हो सकते हैं। अर्थात तुम लोगों को अपनी कसरत पर गर्व है परन्तु यह तो सोचो कि क्या हमेशा कसरत लाभदायक हुआ करती है। बहुत से अँधों का एकत्र होना ताकत का कारण होता है या कमज़ोरी का। एक आँखों वाला हज़ारों अँधों पर ग़ालिब होता है। ऐसे ही उस नबी और उस पर ईमान वालों को ख़ुदा से इलम मिलता है और तुम्हारे मन्सूबों और तदबीरों से ख़ुदाई वह्यी उसे अवगत कर देती है। अत: इसकी उदाहरण देखने वाले की तरह है परन्तु तुम्हें कुछ पता नहीं कि उसकी तरफ़ से क्या-क्या तदाबीर की जा रही हैं क्योंकि उसकी सहायता में अक्सर कोशिशें ख़ुदा तआला की तरफ़ से कानून-ए-क़ुदरत के गुप्त प्रभावों के द्वारा से हो रही हैं जिनसे तुम बिल्कुल अज्ञान हो। फिर सोचो तो सही कि तुम उसका और उसके साथियो का मुक़ाबला क्योंकर कर सकते हो। ये थोड़े हैं तो क्या हुआ हैं तो **शेष पृष्ठ 12 पर**

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-14)

जर्मन सियास्तदान Dr. Gysi की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात, कार्यकर्ताओं का निरीक्षण और व्यवस्था जलसा सालाना जर्मनी 2015 ई

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

4 जून 2015 ई शुक्रवार के दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़-ए-फ़ज्र की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टस मुलाहिज़ा फ़रमाएं और हिदायात से नवाज़ा और विभिन्न दफ़्तरी मामलों के निवारण में व्यस्तता रहे।

दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ ज़ुहर और अस्र जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

जर्मन सियास्तदान Dr. Gysi की हुज़ूर अनवर के साथ मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े चार बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अपने दफ़्तर पधारे। लेफ्ट पार्टी के पारलिमानी लीडर Dr.Gysi हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की मुलाक़ात के लिए आए हुए थे। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मुझे आपसे मिल कर ख़ुशी हुई है। इस पर उन्हों ने भी ख़ुशी के भावनाओ का प्रकटन किया।

इस के बाद Dr.Gysi ने कहा कि इस समय जो मौजूदा हालात हैं उनके कारण से मुझे काफी परेशानी है। परन्तु मैं निराश इन्सान नहीं हूँ। जब cold war ख़त्म हुई थी तो उस समय कोई world order था। परन्तु अब कोई वर्ल्ड आर्डर नहीं है । हर ओर अफ़रातफ़री है। मुस्लमान देशों और वैस्ट देशों के मध्य कल्चर का एक टकराओ शुरू हो गया है जो कि ख़तरनाक है। मिडल ईस्ट में ताक़त और सलतनत की जंग-ए-जारी है। जर्मनी में भी मुस्लमानों के विरुद्ध एक भय पाया जाता है। बर्लिन में जब जमाअत की मस्जिद बनाई जानी थी तो एक जर्मन वर्ग की ओर से शोर मचा था और विरोध हुआ था। यह हमारी ख़ुशक़िसमती थी कि वहां का मेयर हमारी पार्टी का था जो इस विरोध के अतिरिक्त अपनी बात पर क़ायम रहा। और अब वहां मस्जिद मोजूद है। प्रत्येक चीज़ नॉर्मल है और माहौल पर सुकून है और अब लोगों को समझ आ रही है कि जो भय था वह बिलावजा था।

उन्हों ने कहा कि जर्मनी में एक बात यह भी नज़र आ रही हैकि जहां मुस्लमानों की संख्या ज़्यादा है। जिन क्षेत्रों में मुस्लमान बड़ी संख्या में आबाद हैं वहां पर दाई ओर की पार्टीयों को वोट नहीं दिया जाता और जिन क्षेत्रों में मुस्लमानों की संख्या कम है वहां दाई ओर की पार्टीयों को बड़ी संख्या में वोट प्राप्त होते हैं। यह जो एक भय सामने आ रहा है यह भी बड़ा ख़तरनाक है और फिर मीडिया भी इस स्थिति में अपना हिस्सा डाल रहा है। मिडल ईस्ट के विभिन्न देशों लेबनान, सीरिया, इराक़, लीबिया इत्यादि में गया हूँ। मुझे बहुत अच्छा लगा था। उनके अच्छे हालात थे।

उन्हों ने कहा कि मुझे इस बात से ख़ुशी होगी कि यदि मैं जान सकूं कि हुज़ूर का संसार की इस वर्तमान स्थिति के बारे में क्या विचार हैं। उन्हों ने कहा कि मैं एक विशेष किस्म का इन्सान हूँ मैं किसी धर्म से जुड़ा नहीं हूँ।

उनकी इस बात पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया एक इन्सान इन्सानियत पर विश्वास रखे तो बंदों के हुक़ूक़ अदा कर सकता है।

जहां तक उस समय संसार की स्थिति है तो cold war ख़त्म होने के बाद पर्याप्त समय तक संसार में अमन शांति थी। फिर 1991 में इराक़ की जंग शुरू हुई। कुवैत पर हमला करवाया गया और फिर इसके परिणाम में इराक़ पर अमरीका ने हमला करवाया और अमरीका का इस जंग में एक बड़ा रोल था। फिर संसार की शांति को जिस तरह नुक़्सान पहुंचा सब के सामने है।

यूरोप और जर्मनी में एक ज़माने तक सब ठीक रहा। यहां छोटी-छोटी तहरीकें मुस्लमानों के विरुद्ध उठती रही हैं, परन्तु उनका कोई बड़ा रोल नहीं था। फिर 2008 का इकनॉमिक संकट आया और हालात बिल्कुल बिगड़ गए। इस इकनॉमिक संकट ने प्रत्येक कारुख़ इस ओरफेरदिया कि हमने किस तरह दूसरे की इक़तिसादीयात पर क़बज़ा करना है। फिर उसी संकट के इस यूरोपीयन और ग़ैर यूरोपियन के प्रश्न भी उठे जो हालात ख़राब हुए हैं इस में मीडिया का भी बड़ा रोल है। मीडिया ने इस इकनॉमिक संकट को इतना ज़्यादा उछाला है कि जो भय की फ़िज़ा पैदा होनी शुरू हुई थी उस को मज़ीद महत्व मिल गया।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया यूरोप को सस्ती लेबर एशिया से या अफ़्रीक़ा से मिल रही है। यूरोप की हुकूमतें जितनी भी इंसाफ़ पसंद हों प्रवासियों से काम लेकर उनको कम वेतन पर रखा जाता है और यह सब कुछ साफ़ प्रकट हो रहा है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया और फिर जब यह संकट आया तो यूरोप, अमरीका, कैनेडा और प्रत्येक जगह इस का कारण मुस्लमानों को क़रार दिया जाने लगा हर जगह मुस्लमानों पर ज़्यादा आरोप देने लग गए तो इसके उत्तर में मुस्लमानों ने भी दूसरों पर आरोप लगाना शुरू कर दिया और फिर उस स्थिति ने हालात को और ख़राब किया। और फिर पिछले चार वर्षों से जो अरब स्प्रिंग का मुआमला उठा है। अब अक़लमंद वर्ग इस बात पर आरोप देने लग गया है कि इस को करने में बड़ी ताक़तोंका हाथ है। यह ग़लत है या सही यह एक अलग-अलग विषय है परन्तु रिफ़्ट (Rift) बढ़नी शुरू हुई है।

पहले उन्होंने इराक़ को तोड़ा और आरोप लगाया कि उसके पास कैमीकल हथियार हैं अब उन्ही लोगों के राजनेता, अमरीकन लोगों के राजनेता इस किस्म के बयान दे रहे हैं कि इराक़ पर ग़लत आरोप लगाया गया था। उसके पास कोई कैमीकल हथियार नहीं थे।

फिर मिस्र के विरुद्ध उन्होंने कार्रवाई की। हुज़ूर ने फ़रमाया अमरीका में एक अख़बारी प्रतिनिधि को मिस्र के हवाले से एक प्रश्न पर मैंने कहा था कि जिस हुकूमत को अब ये लोग लेकर आए हैं यह तो वर्ष, डेढ़ वर्ष में ख़त्म हो जाएगी और फिर ऐसा ही हुआ और वही तथाकथित इस्लामी हुकूमत जिसको ये लोग ऊपर लेकर आए थे उसने जब उनको आँखें दिखाई तो फिर उसी को आर्मी के माध्यम से उल्टा दिया। अब देखें कि जिस हुकूमत को जनतंत्र क़ायम करने के लिए लाया गया था उसके विरुद्ध आर्मी को स्पोर्ट किया और आर्मी की सहायता से उसे ख़त्म दिया।

फिर लीबिया के साथ जो कोलाहल हुआ है वह आपके सामने है लीबिया में क़ज़ाफ़ी की हुकूमत ख़त्म करके जनतंत्र क़ायम करने का इरादा था, परन्तु अब जनतंत्र कहाँ है। हर क़बीला ने अपनी-अपनी हुकूमत बना ली है। पहले जो अमन था वह भी बर्बाद हुआ और फिर जनतंत्र भी क़ायम नहीं हो सका।

इस किस्म के हालात दूसरे अरब देशों के हैं। अब यूरोप के लोग यह कहते हैं कि उनको अरब देशों के बिगड़े हुए हालात और वहां की इंतिहा-पसंदी तन्ज़ीमों की ओर से भय आने लगा है।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अब मुझे ज्ञान नहीं कि जर्मनी की क्या स्थिति है। परन्तु यू.के के हालात को मैं जानता हूँ। वहां से जो लोग Radicalize हो कर ISIS के नाम पर उन अरब देशों में जा रहे हैं। ये वह लोग हैं जो नौकरी न मिलने, काम न मिलने के कारण से Frustrat हैं। बर्तानिया में

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया नि:संदेह अल्लाह तआला ने हक़ को उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान और ह्रदय पर क़ायम कर दिया और वह "फ़ारूक़" है क्योंकि अल्लाह तआला ने उसके द्वारा सच और झूठ में अंतर कर दिया

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान दूसरे ख़लीफ़ा राशिद फ़ारूक़-ए-आज़म, हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन किया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया

اَللّٰهُمَّ أَعِزَّ الْإِسْلَامَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ خَاصَّةً कि हे अल्लाह विशेषता उमर बिन खत्ताब के द्वारा इस्लाम को सम्मान प्रदान कर

जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया तो हज़रत जिब्राईल नाज़िल हुए और कहा हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने से आसमान वाले भी ख़ुश हैं

छः देहान्त पाने वाले आदरणीय अहमद मुहम्मद उसमान शबूती साहब सदर जमात अहमदिया यमन, आदरणीय क़ुरैशी ज़काउल्ला साहब एकाऊंटैंट दफ़्तर जलसा सालाना, आदरणीय मलिक ख़ालिक़ दाद साहब कैनेडा, आदरणीय मुहम्मद सलीम साबिर साहब कर्मचारी नज़ारत अमूर-ए-आम्मा, आदरणीया नईमा लतीफ़ साहबा पत्नी साहबज़ादा महदी लतीफ़ साहब आफ़ अमरीका और आदरणीया सफिया बेग़म साहबा पत्नी मुहम्मद शरीफ़ साहब आफ़ कैनेडा का वर्णन और नमाज़-जनाज़ा ग़ायब

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार के संबंध में अत्यधिक रिवायतों का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 23 अप्रैल 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

आज मैं हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु का वर्णन करूँगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का संबंध क़बीला बनू अदी बिन काब बिन लुई से था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पिता का नाम खत्ताब बिन नफ़ील था। एक कथन के अनुसार आप रज़ियल्लाहु अन्हु के माताका नाम हन पुत्री हिश्शाम था। इसी तरह आप रज़ियल्लाहु अन्हु की माता अबू जहल की चचाज़ाद बहन बनती हैं और दूसरे कथन के अनुसार उनकी माता का नाम हनतमा पुत्री हिश्शाम था। इस तरह वह अबू जहल की बहन बनती हैं लेकिन यह रिवायत जो बहन वाली है यह ज़्यादा स्वीकार नहीं की जाती। अबू उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जो यह कहता है कि अबू जहल की बहन थीं तो उसने ग़लती की। यदि ऐसा होता तो अबू जहल और हारिस की बहन होतीं जबकि हक़ीक़त में ऐसा नहीं है। वह उन दोनों की चचा की बेटी थीं। उनके पिता का नाम है।

(अल-इस्तेयाब फ़ी तमीज़ अल-सहाबा भाग 4 पृष्ठ 484 उमर बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2005 ई.) (ओसोदुल ग़ाबा भाग 4 पृष्ठ 138 उमर बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की जन्म की तिथि के बारे में विभिन्न रिवायते वर्णन हुई हैं जिनके अनुसार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की जन्म की तिथि का वर्ष अलग अलग बनता है। इस लिए एक राय यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बड़ी जंग फ़ुज्ार से चार वर्ष पहले पैदा हुए थे जबकि दूसरी जगह लिखा है कि बड़ी जंग फ़ुज्ार के चार वर्ष बाद पैदा हुए थे। उसे जंग फ़ुज्ार इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह लड़ाई हुर्मत वाले महीने में हुई जो बहुत झूठीऔर ग़लत बात है। यह जंग चार चरणों में हुई थी। चौथी जंग को اَلْفُجَارُ الْاَعْظَم، बड़ी जंग फ़ुज्ार के अतिरिक्त اَلْفُجَارُ الْاَعْظَمُ الْآخِر अंतिम बड़ी जंग फ़ुज्ार भी कहते हैं। यह क़ुरैश और बनू कनाना तथा हवाज़िन के मध्य हुई थी। एक दूसरी राय यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु आमुल फ़ील के तेराह वर्ष बाद मक्का में पैदा थे।

(तारीख़ दमिशक़ लेइब्ने असाकिर भाग 47 पृष्ठ 45 उमर बिन खत्ताब प्रकाशन दारुल अहया तुर्रासअरबी बेरूत 2001ई.) (अल-इस्तेयाब फ़ी तमीईज़ अलसहाबा भाग 4 पृष्ठ 484 उमर बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2005 ई.) (उद्धरित एटलस सीरत नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 102 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़1424 हिज्री)

आमुल फ़ील 570 ईसवी का वर्ष है और इसके तेराह वर्ष बाद के हिसाब से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का जन्म का वर्ष 583 ई. बनता है। तीसरी राय यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने 6 नब्वी में इस्लाम स्वीकार किया और उस वक़्त उनकी आयु 26 वर्ष थी।

(अल-तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 204 इस्लाम उमर रज़ियल्लाहु अन्हु। दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1990 ई.) (उद्धरित एटलस सीरत नब्वी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पृष्ठ 75 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1424 हिज्री)

सन ईसवी के अनुसार से 6 नब्वी 616 ईसवी का वर्ष बनता है। यदि उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु 26 वर्ष के थे तो उनकी जन्म का वर्ष 590 ई. बनता है। चौथी राय यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तब पैदा हुए जब नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इक्कीस वर्ष के थे।(तारीख़ अलख़मीस फ़ी अहवाल अन्फ़स नफ़ीस भाग प्रथम पृष्ठ 259 वालिद उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, मोअस्सा शाबान बेरूत)

बहरहाल यह विभिन्न विचार हैं, तक़रीबन इक्कीस और छब्बीस वर्ष के मध्य की आयु बनती है जब उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का गोत्र अबू हफ़स था।

(अल-इस्तेयाब फ़ी तमीईज़ अलसहाब भाग 4 पृष्ठ 484 उमर बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2005ई.)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग बदर के दिन अपने अस्हाब से फ़रमाया कि मुझे पता चला है कि बनू हिश्शाम और कुछ दूसरे लोग क़ुरैश के साथ मजबूरन आए हैं वे हमसे लड़ना नहीं चाहते। अत: तुम में से जो कोई बनू हिश्शाम के किसी आदमी से मिले तो इस को क़तल न करे और जो अबुल बख्तरी से मिले वह उसको क़तल न करे और जो अब्बास बिन अब्दुल मुत्लिब जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के चचा हैं उनसे मिले तो वह उनको भी क़तल न करे क्योंकि ये लोग मजबूरन क़ुरैश के साथ आए हैं। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू हुजैय्फा बिन उत्बा ने कहा कि हम अपने बापों, बेटों, भाईयों और रिश्तेदारों को तो क़तल करें और अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को छोड़ दें। अल्लाह की क़सम! यदि में उसे अर्थात अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु को मिला तो मैं तलवार से ज़रूर उसे क़तल कर दूँगा। रावी कहते हैं कि यह ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंची तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया। हे अबू हफ़स! हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि अल्लाह की क़सम यह पहला दिन था कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे अबू हफ़स के नाम से संबोधित फ़रमाया था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या रसूलुल्लाह के चचा के चेहरे पर तलवार मारी जाएगी? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अर्ज़ किया या

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझे इजाज़त दें कि मैं तलवार से उस की गर्दन उड़ा दूं जिसने यह कहा है। अल्लाह की क़सम उसने अर्थात अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुनाफ़क़त दिखाई है। हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु बाद में कहा करते थे कि मैं इस कलिमा की वजह से जो मैंने उस दिन कहा था चैन से नहीं रहा और हमेशा इस से डरता रहा अतिरिक्तए उसके कि शहादत मेरी इस बात का कफ़्फ़ारा कर दे इस लिए हज़रत अबू हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु जंग यमामा के दिन शहीद हो गए थे। (सीरत इब्ने हिश्शाम पृष्ठ 429 बाब ग़ज़वा बदर, नहा नबिय्या व असहाबहो कतल नास मिनल्मुश्रेकीन प्रकाशन दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को 'फ़ारूक़ के नाम से नवाज़ा था।

(उद्धरित ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाबा भाग 4 पृष्ठ 143 दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत लुबनान)

इस नाम की पृष्ठ भूमि क्या थी? इसके बाद यह रिवायत मिलती है कि हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु का नाम फ़ारूक़ किस तरह रखा गया? उन्होंने फ़रमाया कि हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे तीन रोज़ पहले इस्लाम स्वीकार किया था। मैं इत्तिफ़ाक़न मस्जिद हराम की तरफ़ जा निकला तो अबू जहल तेज़ी से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास गालियां देते हुए गया। फिर उन्होंने हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की वे सारी बात वर्णन की जो उन्होंने किया कि जब हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को ख़बर हुई तो अपनी कमान लेकर ख़ाना काअबा की तरफ़ चले और क़ुरैश के उस हलक़े में जिसमें अबू जहल बैठा था उस के सामने अपनी कमान पर सहारा लेकर खड़े हो गए और उस को लगातार घूरने लगे। अबू जहल ने आप रज़ियल्लाहु अन्हु के चेहरे से नाराज़गी महसूस की तो उसने कहा हे अबू अम्मारा! यह हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु की कुनिय्यत थी, क्या मुआमला है? यह सुनते ही हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी कमान ज़ोर से उसके गाल पर मारी कि वह कट गया और इस से ख़ून बहने लगा। और उनके ग़ुस्सा के ख़ौफ़ की वजह से क़ुरैश ने तुरंत झगड़ा ख़त्म करवा दिया।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह घटना वर्णन की कि इस तरह हुआ जो मैंने भी देखा था। कहते हैं कि इस घटना के तीसरे दिन मैं बाहर निकला तो रास्ते में मुझे बनू मख़्ज़ूम का एक व्यक्ति मिला। मैंने उस से पूछा कि क्या तुमने अपने बाप दादा के दीन को छोड़ कर के मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दीन स्वीकार कर लिया है। उसने कहा कि यदि मैं ने कर लिया है तो इस में कौन सी बड़ी बात है। उसने भी तो कर लिया है जिस पर तुम को मुझसे ज़्यादा हक़ है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मैं ने कहा वह कौन है? उसने कहा तुम्हारी बहन और बहनोई। सुनकर जब में अपनी बहन के घर गया तो मैंने दरवाज़े को बंद पाया और मुझे वहां कुछ पढ़ने की छुप कर धीरे धीरे आने वाली आवाज़ सुनाई दी। मेरे लिए दरवाज़ा खोला गया और मैं अंदर दाख़िल हो गया और उनसे कहा यह मैंने तुमसे क्या सुना है? उन्होंने कहा तुमने क्या सुना है? इस बात चीत में बात बढ़ गई और मैंने बहनोई का सिर पकड़ लिया और उसको मारा और उसे लहूलुहान कर दिया। मेरी बहन उठी और उसने मुझे सिर से पकड़ लिया और कहा यह तुम्हारी ख़ाहिश के ख़िलाफ़ हुआ है अर्थात हमारा इस्लाम लाना तुम्हारी ख़ाहिश के ख़िलाफ़ है। बहरहाल दूसरी रिवायत में बहन के ज़ख़मी होने का भी वर्णन मिलता है।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने जब बहनोई का ख़ून देखा या हो सकता है कि उस वक़्त बहन का भी हो गया हो तो मुझे शर्मिंदगी हुई और मैं बैठ गया और कहा मुझे यह किताब दिखाओ। मेरी बहन ने कहा कि उसे केवल पवित्र लोग ही छू सकते हैं। यदि सच्च बोल रहे हो तो जाओ और स्नान करो। इस लिए मैंने स्नान किया और आकर बैठ गया तो उन्होंने वह पृष्ठ मेरे लिए निकाला। उस में था بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ। मैंने कहा यह नाम तो बड़े पवित्र और पाकीज़ा हैं। इसके बाद था طٰہٰ مَاۤ اَنۡزَلۡنَا عَلَیۡکَ الۡقُرۡاٰنَ لِتَشۡقٰۤی यहां से लेकर لَہُ الۡاَسۡمَآءُ الۡحُسۡنٰی, ताहा आयत 2 से 9 तक थीं। कहते हैं मेरे दिल में इस कलाम की बड़ी महानता पैदा हुई। मैंने कहा क़ुरैश इससे भागते हैं। मैंने इस्लाम स्वीकार कर लिया और मैंने कहा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहाँ हैं? मेरी बहन ने बताया कि वह दार-ए-अर्क़म में हैं। मैं वहां पहुंचा और दरवाज़ा खटखटाया तो वहां मौजूद सहाबा जमा हो गए। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा तुम लोगों को किया हुआ है? उन्होंने कहा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि चाहे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ही हो उसके लिए दरवाज़ा खोल दो। यदि वह बाहर दरवाज़े पर खड़ा है। यदि वह अच्छे इरादे से आए हैं तो हम उन्हें स्वीकार कर लेंगे और यदि वह बुरी नीयत से आए हैं तो हम उसे क़तल कर देंगे। ये बातें रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी सुन लीं। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कलिमा शहादत पढ़ा इस पर घर में मौजूद समस्त सहाबा ने बुलंद आवाज़ से अल्लाहु-अकबर कहा जिसको अहल मक्का ने सुना। मैंने अर्ज़ किया हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या हम हक़ पर नहीं हैं? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं मैं ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से अर्ज़ की हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम क्या हम हक़ पर नहीं हैं? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्यों नहीं। मैंने कहा फिर यह छुपना क्यों है? हम अपने दीन को छुपा के क्यों बैठे हुए हैं? इसके बाद हम वहां से दो सफ़ों में हो कर निकले। एक सफ़ में मैं था और दूसरी सफ़ में हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु थे यहां तक कि हम मस्जिद हराम में दाख़िल हुए। इस पर क़ुरैश ने मुझे और हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा और उनको ऐसा शदीद दुख और तकलीफ़ पहुंची कि इस तरह की तकलीफ़ पहले कभी नहीं पहुंची थी। इस लिए उस दिन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरा नाम "फ़ारूक़" रखा क्योंकि इस्लाम को तक़वियत पहुंची और हक़ और बातिल के मध्य अंतर पैदा हो गया। (तारीख़ खुल्फ़ा अज़ जलालुद्दीन अबदुर्रहमान बिन अबी बिक्र सयूती पृष्ठ 91 से 92 प्रकाशन दारुल क़ुतुब अरबी बेरूत लुबनान 1999 ई.)

अय्यूब बिन मूसा से मर्वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : नि:संदेह अल्लाह तआला ने हक़ को उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की ज़बान और हृदय पर क़ायम कर दिया और वह "फ़ारूक़" है क्योंकि अल्लाह तआला ने इसके द्वारा से सच और झूठ में अंतर कर दिया।

(ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाबा भाग 4 पृष्ठ 143 दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत लुबनान)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु लम्बे क़द और मज़बूत जिस्म के मालिक थे। सिर के अगले हिस्सा पर बाल नहीं थे। रंग लाल और मूँछें घनी थीं जिनके किनारों पर लाली झलकती थी और आप रज़ियल्लाहु अन्हु के बाल हल्के फुल्के थे।

(अल-इस्तेयाब फ़ी तमीईज़ अलसहाब भाग 4 पृष्ठ 484 उमर बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2005 ई.)

ज़माना-ए-जाहिलियत में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के जो शुग़ल थे उनके बारे में इस तरह वर्णन मिलता है कि घुड़सवारी और कुश्ती हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के महबूब मशाग़ुल में से थे। उकाज़ के मेले में हर वर्ष कुश्ती का मुक़ाबला साधारणता हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ही जीता करते थे। नौजवानी में अरब के आम रिवाज के अनुसार अपने पिता के ऊंट चुराया करते थे।

(उद्धरित सय्यदना हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म रज़ियल्लाहु अन्हु, मुहम्मद हुसैन हैकल से (अनुवादक) पृष्ठ 51-52 प्रकाशन इस्लामी पुस्तकों ख़ाना लाहौर)

इस्लाम से पहले अरब में लिखने पढ़ने का चंदाँ रिवाज नहीं था। इसलिए जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मबऊस हुए तो क़बीला क़ुरैश में केवल सतरह आदमी ऐसे थे जो लिखना जानते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस वक़्त उस ज़माने में लिखना और पढ़ना सीख लिया था।

(उद्धरित सैर सहाबा भाग 1 पृष्ठ 133 प्रकाशन दारुल इशाअत कराची 2004 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अशराफ़-ए-क़ुरैश में से थे। इस्लाम से पहले क़ुरैश की तरफ़ से सिफ़ारत का ओहदा आप रज़ियल्लाहु अन्हु के सपुर्द था और क़ुरैश का दस्तूर था कि जब उनके मध्य या उनके और ग़ैरों के मध्य कोई जंग होती तो वो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को बतौर सफ़ीर भेजते थे। (ओसोदुल ग़ाबा फ़ी मारेफ़तिल सहाबाा भाग 3 पृष्ठ 642 उमर बिन ख़त्ताब प्रकाशन दारुल फ़िक्र बेरूत 2003 ई.)

जब हब्शा की तरफ़ कुछ मुस्लमानों ने हिज्रत की तो उस वक़्त हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के जो जानकर थे उनको हिज्रत करते देख के हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का जो प्रतिक्रिया थी अतिरिक्त इस के कि आप रज़ियल्लाहु

अन्हु अभी इस्लाम नहीं लाए थे और सख़्त तबीयत के भी मालिक थे लेकिन प्रतिक्रिया निहायत भावुकता वाली थी। इस बारे में हज़रत उम्मे अब्दुल्लाह पुत्री अबू हश्मा वर्णन करती हैं कि अल्लाह की क़सम! जब हब्शा की ज़मीन की जानिब रवाना होने लगे और मेरे पति आमिर बिन रबी रज़ियल्लाहु अन्हा अपने किसी काम से गए हुए थे तो उसी दौरान हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु आए और मेरे पास खड़े हो गए और वह अभी तक अपने शिर्क पर ही क़ायम थे और हमें उनकी तरफ़ से तरह-तरह के कष्ट और तकालीफ़ बर्दाश्त करने पड़ते थें। वह वर्णन करती हैं कि उन्होंने मुझसे कहा। हे उम्मे अब्दुल्लाह लगता है कहीं रवानगी का इरादा है। वर्णन करती हैं कि मैंने कहा कि हाँ अल्लाह की क़सम ज़रूर हम अल्लाह की ज़मीन में निकल जाऐंगे। कहीं जा रहे हैं। तलाश करते हैं कि कहाँ जाना है। बड़ी वसीअ ज़मीन है अल्लाह की। तुम लोगों ने तो हमें बहुत सताया है और हम पर बहुत ज़ुलम ढाए हैं यहां तक कि अल्लाह ने हमारे लिए अब निजात की राह पैदा कर दी है। उम्मे अब्दुल्लाह वर्णन करती हैं कि वह कहने लगे अल्लाह तुम्हारे साथ हो। उम्मे अब्दुल्लाह कहती हैं कि जैसी भावुकता उस वक़्त मैंने उन पर देखी पहले कभी नहीं देखी थी। इसके बाद वह चले गए। मेरा ख़्याल है कि हमारे निकलने ने उन्हें ग़मगीं कर दिया था। उम्मे अब्दुल्लाह कहती हैं कि जब आमिर बिन रबी अपने काम से वापस आए तो मैंने उनसे कहा हे अब्दुल्लाह काश अभी तुम उमर की हालत देखते और हमारे लिए उनकी भावुकता और ग़म को देखते। आमिर बिन रबीया ने कहा क्या तुम उनके इस्लाम लाने की आशा रखती हो? इस बात से प्रभावित हो गई होगी कि वह इस्लाम ले आएँगे। वह कहती हैं मैंने कहा हाँ। इस पर उसने अर्थात आमिर बिन रबी ने कहा कि वह कभी इस्लाम स्वीकार नहीं करेगा। जिसे तुमने देखा है वह इस्लाम स्वीकार नहीं करेगा यहां तक कि खत्ताब का गधा इस्लाम स्वीकार कर ले। उम्मे अब्दुल्लाह कहती हैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम के विषय में सख़्ती और शिद्दत को देख कर उस से मायूस होते हुए आमिर बिन रबी ने यह बात कही थी।

(सीरत इब्ने हिश्शाम पृष्ठ 159 बाब वर्णन इस्लाम उमर बिन अलख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु प्रकाशन दार इब्ने हज़म बेरूत 2009 ई.)

इतना सख़्त दुश्मन हो तो किस तरह हो सकता है वह इस्लाम स्वीकार कर ले। इस घटना का वर्णन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने रूप में वर्णन फ़रमाया है। "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को इस्लाम से शदीद दुश्मनी थी।" आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं "लेकिन उनमें रुहानी क़ाबिलीयत भी मौजूद थी अर्थात अतिरिक्त आप रज़ियल्लाहु अन्हु में शदीद ग़ुस्सा होने के, अतिरिक्त रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु को तकालीफ़ पहुंचाने के उनके अंदर जज़बा भावना भी मौजूद थी। इस लिए जब हब्शा की तरफ़ पहली हिज्रत हुई तो मुस्लमानों ने नमाज़-ए-फ़ज्र से पहले मक्का से रवानगी की तैयारी की ताकि मुशरिक उन्हें रोकें नहीं और उन्हें कोई तकलीफ़ न पहुंचाएं। मक्का में यह रिवाज था कि रात को कुछ शहर के सरदार दौरा किया करते थे ताकि चोरी इत्यादि न हो। "जायज़ा लेते थे गलीयों में।'' इसी दस्तूर के अनुसार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु भी रात को फिर रहे थे कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा। एक जगह घर का सब सामान बंधा है। " सारा सामान।'' आप रज़ियल्लाहु अन्हु आगे बढ़े। एक सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा सामान के पास खड़ी थीं। इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा के पति के साथ शायद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के संबंधात थे। इस लिए आपने इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा को मुख़ातब कर के कहा। बी-बी यह क्या बात है, मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि तुम किसी लंबे यात्रा पर जा रही हो। इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा का पति वहां नहीं था। यदि वह वहां होता तो हो सकता था कि मुशरिकीन-ए-मक्का की अदावतों और दुश्मनीयों की वजह से हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की यह बात सुनकर वह कोई बहाना बना देता।" कि जा रहे हैं कि नहीं जा रहे। या थोड़ा यात्रा पर हैं या किस जगह जा रहे हैं या निकट ही कोई जगह है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "लेकिन औरत को यह विचार नहीं था।" उस औरत को यह ख़्याल नहीं आया। या था भी तो उसने सच्चाई से काम लिया। "इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हम तो मक्का छोड़ रहे हैं। उन्होंने कहा तुम मक्का छोड़ रही हो? सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा हाँ हम मक्का छोड़ रहे हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा तुम क्यों मक्का छोड़ रहे हो? सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने उत्तर दिया कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हम इस लिए मक्का छोड़ रहे हैं कि तुम और तुम्हारे भाई हमारा यहां रहना पसंद नहीं करते और हमें एक ख़ुदा की इबादत करने में यहां आज़ादी प्राप्त नहीं। इस लिए हम वतन छोड़ कर किसी दूसरे देश में जा रहे हैं। अब अतिरिक्त इसके कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस्लाम के शदीद दुश्मन थे। अतिरिक्त इसके कि वह ख़ुद मुस्लमानों को मारने पर तैयार रहते थे। रात के अंधेरे में इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा से यह उत्तर सुनकर कि हम वतन छोड़ रहे हैं इस लिए कि तुम और तुम्हारे भाई हमारा यहां रहना पसंद नहीं करते और हमें एक ख़ुदा की इबादत आज़ादी से नहीं करने देते हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपना मुँह दूसरी तरफ़ फेर लिया। "ये बात सुनके'' और इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम लेकर कहा कि अच्छा जाओ ख़ुदा तुम्हारा हाफ़िज़ हो। मालूम होता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पर भावनाओं का ऐसा जज़बा आया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़्याल किया कि यदि मैंने दूसरी तरफ़ मुँह न किया तो मुझे रोना आ जाएगा। इतने में इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा के पति भी आ गए। वह समझते थे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु! इस्लाम के शदीद दुश्मन हैं। उन्होंने जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु को वहां खड़ा देखा तो ख़्याल किया यह हमारी यात्रा में कोई रोक पैदा न कर दें। उन्होंने अपनी बीवी से दरयाफ़त किया कि यह यहां कैसे आ गया? उसने बताया कि वह इस तरह आया था और इस ने प्रश्न किया था कि तुम कहाँ जा रहे हो? उन्होंने कहा कि यह कोई शरारत न कर दे। "इस वक़्त जाने लगे होंगे, वहां खड़े देखा होगा। इस के बाद उनके आने से पहले ही या निकट पहुंचने से पहले ही हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहां से रवाना हो चुके थे। या उनके मिलने के बाद रवाना हुए। बहरहाल उन्होंने कहा कोई शरारत न कर दे।" इस सहाबिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा कि हे मेरे चचा के बेटे (अरब औरतें आम तौर पर अपने पतियों को चचा का बेटा कहा करती थीं) तुम तो यह कहते हो कि वह कहीं कोई शरारत न कर दे परन्तु मुझे तो ऐसा मालूम होता है कि उसने किसी दिन मुस्लमान हो जाना है क्योंकि जब मैंने कहा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु! हम इस लिए मक्का छोड़ रहे हैं कि तुम और तुम्हारे भाई हमें एक ख़ुदा की इबादत आज़ादी से नहीं करने देते तो उसने मुँह फेर लिया और कहा। अच्छा जाओ ख़ुदा तुम्हारा हाफ़िज़ हो। उसकी आवाज़ में हमदर्दी थी और मैं समझती हूँ कि उसकी आँखों में आँसू भर आए थे। इस लिए मालूम होता है कि वह ज़रूर किसी दिन मुस्लमान जाएगा।''
(तफ़सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 140-141)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने के लिए आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दुआएं भी की थीं। इस बारे में रिवायत में आता है। हज़रत इब्ने उमर वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लुल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। اَللّٰهُمَّ أَعِزَّ الْاِسْلَامَ بِأَحَبِّ هٰذَيْنِ الرَّجُلَيْنِ إِلَيْكَ بِأَبِيْ جَهْلٍ أَوْ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ۔ हे अल्लाह! तू उन दो व्यक्तियों अबू जहल और उमर बिन खत्ताब में से अपने ज़्यादा महबूब व्यक्ति के द्वारा इस्लाम को सम्मान प्रदान कर। इब्ने उमर कहते हैं कि इन दोनों में से अल्लाह को ज़्यादा महबूब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु थे।

(सुंन अल्तिरमिज़ी अबवाबुल मनाक़िब बाब फि मनाकिब अबी हफसा बिन खत्ताब 3681)

हज़रत इब्ने उमर से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। اَللّٰهُمَّ أَيِّدِ الدِّيْنَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ۔ हे अल्लाह उमर बिन खत्ताब के द्वारा से दीन की सहायता फ़र्मा।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने वर्णन किया कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। اَللّٰهُمَّ أَعِزَّ الْإِسْلَامَ بِعُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ خَاصَّةً कि हे अल्लाह विशेषता उमर बिन खत्ताब के द्वारा इस्लाम को सम्मान प्रदान कर।

(मुस्तदरिक ले हाकिम अला सहीहैन भाग 3 पृष्ठ 89 किताब मअरफतिस्सहाबा बाब मनाक़िब अमीरुल मोमिनीन उमर बिन ख़त्ताब हदीस नम्बर 4485,4483 दारुल कुतुब अल्इल्मिया बैरूत 2002 ई)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने से एक दिन पहले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह दुआ फ़रमाई थी। اَللّٰهُمَّ أَيِّدِ الْإِسْلَامَ بِأَحَبِّ الرَّجُلَيْنِ إِلَيْكَ، عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ أَوْ عَمْرِو بْنِ هِشَامٍ हे अल्लाह इन दो लोगों में से जो तुझे ज़्यादा महबूब है उस के द्वारा से इस्लाम की सहायता फ़र्मा। उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु या अम्र बिन हिश्शाम। عُمَرَ بْنِ الْخَطَّابِ أَوْ عَمْرِو بْنِ هِشَامٍ उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से या अम्र बिन हिश्शाम से। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया तो हज़रत

जिब्राईल नाज़िल हुए और कहा हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने से आसमान वाले भी ख़ुश हैं। तब्कातुल कुबरा की यह रिवायत है।

(अल् तब्कातुल कुबरा लेइब्ने साद भाग 3 पृष्ठ 143 बाब इस्लाम उमर रज़ियल्लाहु अन्हु प्रकाशन दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत लुबनान 1996 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार के बारे में मज़ीद यह है कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु ने ज़ुल हज्जा 6 नब्वी में इस्लाम स्वीकार किया था। (अल-तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 204 प्रकाशन दारुल क़ुतुब अल इल्मिया 1990 ई.)

इस्लाम स्वीकार करने की वजह बनने वाले अत्यधिक वाक़ियात और रिवायते पुस्तकों हदीस और सीरत में वर्णित हैं। इस्लाम स्वीकार करने के विषय में एक रिवायत यह है। सीरतुल हल्बिया में यह रिवायत है कि एक मर्तबा अबू जहल ने लोगों से कहा कि हे क़ुरैश के गिरोह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे उपास्यों को बुरा भला कहता है और तुम्हें बेअक़ल ठहराता है। तथा तुम्हारे बुज़ुर्गों के बारे में कहता है कि वे जहन्नुम का ईंधन बन रहे हैं। इसलिए मैं ऐलान करता हूँ कि जो व्यक्ति मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करेगा मेरी तरफ़ से वह एक सौ लाल और काले ऊंटों और एक हज़ार औक़िया चांदी के इनाम का हक़दार होगा। एक औक़िया चालीस दिरहम का होता था अर्थात तक़रीबन 126 ग्राम और कुछ के नज़दीक इस से भी ज़्यादा बनती है लेकिन बहरहाल एक बहुत बड़ी रक़म थी जो उसने (औक़िया जो है 126 ग्राम है तो यह बहुत बड़ी रक़म बनती है) इनाम के तौर पर निर्धारित की थी और एक दूसरी रिवायत जो है वह इस तरह है कि जो व्यक्ति मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करे उसको इतने औक़िया सोना और इतने औक़िया चांदी और इतना मशक और इतने क़ीमती कपड़े और इसके अतिरिक्त दूसरी बहुत सी चीज़ें देने का ऐलान किया। यह सुन कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बोले कि में इस इनाम का हक़दार बनूँगा। लोगों ने कहा नि:संदेह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह इनाम तुम्हारा होगा। इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे इस बारे में बाक़ायदा मुआहिदा किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि इसके बाद मैं नंगी तलवार अपने कंधे से लटका कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलाश में निकला। रास्ते में एक जगह से गुज़रा जहां एक बछड़ा ज़िबाह किया जा रहा था। मैंने इस बछड़े के पेट में से आवाज़ सुनी। हे आले ज़री! (ज़री उस बिछड़े का नाम था जो ज़बह किया जा रहा था) एक पुकारने वाला पुकार रहा है और साफ़ आवाज़ में कह रहा है और इस बात की गवाही की तरफ़ बुला रहा है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और यह कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने अपने आपसे कहा इस में मेरी तरफ़ ही इशारा है।(अल् सीरतुल हल्बिया भाग पृष्ठ 470 अल्हिजरतुल ऊला इला अर्ज़ेल हब्शा...दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2002 ई.) (लुग़तुल हदीस भाग 4 पृष्ठ 527)

यदि सीरतुल हल्बिया की यह रिवायत सही है तो लगता है कोई कशफ़ी नज़ारा था जो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वहां उस वक़्त देखा या किसी तरफ़ से आवाज़ आई।

तीसरी रिवायत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने के बारे में जो मिलती है यह है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक दिन मैं हर्म में तवाफ़ करने के इरादे से आया। उस वक़्त रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए नमाज़ पढ़ रहे थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब नमाज़ पढ़ा करते थे तो शाम मुल्क की तरफ़ मुँह कर लिया करते थे अर्थात बैतुल-मुक़द्दस के पत्थर की तरफ़ इस तरह कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम काबा को अपने और शाम अर्थात बैतुल-मुक़द्दस के मध्य कर लिया करते थे। इस तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नमाज़ की जगह हज्र-ए-असवद और रुकन यमानी के मध्य हुआ करती थी। रुकन यमानी काअबा का दक्षिण पश्चिम का कोना है जो यमन की तरफ़ है क्योंकि उस के बग़ैर बैतुल-मुक़द्दस का सामना नहीं होता था। उद्देश्य हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि जब मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा तो मैंने सोचा कि आज की रात में भी मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का कलाम सुनूँ कि यह क्या कहते हैं। फिर मैंने सोचा कि यदि मैं सुनने के लिए उनके निकट गया तो मैं उन्हें होशयार कर दूँगा इसलिए मैं हज्र-ए-असवद की तरफ़ से आया और ख़ाना काअबा के ग़लाफ़ के पीछे हो गया और आहिस्ता-आहिस्ता चलने लगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इसी तरह नमाज़ में व्यस्त रहे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूरत अल् रहमान की तिलावत की। यहां तक कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बिल्कुल सामने हो गया जिस तरफ़ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुँह किया हुआ था। मेरे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के मध्य ग़लाफ़ काअबा के अतिरिक्त कुछ न था। जब मैंने क़ुरआन-ए-करीम सुना तो मेरा दिल उस की वजह से पिघल गया और मैं रो पड़ा और इस्लाम मेरे अंदर दाख़िल हो गया। मैं इसी तरह अपनी जगह खड़ा रहा यहां तक कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी नमाज़ मुकम्मल की और वहां से वापस तशरीफ़ ले गए तो मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे-पीछे चलने लगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे पैरों की आहट सुनी तो मुझे पहचान लिया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह समझे कि मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को कोई तकलीफ़ पहुंचाने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पीछा कर रहा हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे डाँटा और फिर कहा : हे इब्ने खत्ताब तुम इतनी रात गए किस इरादे से आए हो? मैंने अर्ज़ किया मैं अल्लाह पर और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर और उस पर जो अल्लाह की तरफ़ से आया है ईमान लाने के लिए आया हूँ।

एक चौथी रिवायत जो है वह इस तरह मिलती है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं एक रात मेरी बहन को प्रसव पीड़ा उठी तो मैं घर से निकल आया और दुआ करने के लिए काअबा के पर्दों के साथ लिपट गया। उस वक़्त नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए और हज्र-ए-असवद के पास जितनी अल्लाह ने चाही नमाज़ पढ़ी और फिर तशरीफ़ ले गए। उस वक़्त मैंने ऐसा कलाम सुना जो इस से पहले कभी नहीं सुना था। इस लिए जब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वहां से निकले तो मैं आपके पीछे-पीछे चलने लगा। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कौन है? मैंने उत्तर दिया कि उमर हूँ तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे उमर तुम मुझे न रात को छोड़ते हो और न दिन को। यह सुनकर मैं डरा कि कहीं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मीरे लिए बददुआ न फ़र्मा दें तो मैंने तुरंत कहा أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَأَنَّكَ رَسُوْلُ اللهِ अर्थात मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और निसंदेह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। तब आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया हे उमर! क्या तुम अपने इस्लाम को छुपाना चाहते हो? मैंने कहा : नहीं। कसम है उस ज़ात की जिसने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दीन-ए-हक़ दे कर भेजा है कि मैं अपने इस्लाम का भी इसी तरह ऐलान करूँगा जैसे अपने शिर्क का ऐलान किया करता था। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन की और फ़रमाया उमर! अल्लाह तआला तुझे इस्लाम पर क़ायम रखे। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे सीने पर हाथ फेरा और मेरे लिए साबित क़दमी की दुआ फ़रमाई। इसके बाद मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास से चला गया और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने घर में तशरीफ़ ले गए।

(अल् सीरतुल हल्बिया भाग पृष्ठ 469 बाब अल्हिजरतुल ऊला इला अर्ज़ेल हब्शा दारुल क़ुतुब अल इल्मिया बेरूत 2002 ई.) (फ़र्हंग सीरत पृष्ठ 135)

इस्लाम स्वीकार करने के विषय में जो पांचवी और प्रसिद्ध रिवायत है इसकी कुछ मुख़्तसर तफ़सील पहले भी वर्णन हो चुकी है। वह इस तरह है कि हज़रत अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि एक दिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तलवार उठाते हुए निकले। रास्ते में बनू ज़ुहरा का एक आदमी मिला उसने आप रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा उमर कहाँ का इरादा है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करने जा रहा हूँ (नऊज़ूबिल्लाह) (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं)। उसने कहा मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल करके क्या तुम बनू हिश्शाम और बनू ज़ुहरा से अमन प्राप्त कर लोगे? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मैं समझता हूँ कि तुम साबी हो गए हो। उस को भी कहा और अपने दीन से फिर गए हो जिस पर तुम थे। उस आदमी ने कहा कि हे उमर! क्या मैं तुम्हें इस से ज़्यादा आश्चर्य की बात न बताऊं। मुझे तुम कह रहे हो कि साबी हो गए हो तो इस से भी बड़ी बात बताता हूँ कि तुम्हारी बहन और बहनोई दोनों साबी हो गए हैं और इस

दीन से मुनहरिफ़ हो गए हैं जिस पर तुम हो। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों की निंदा करते हुए उनके घर आए। दोनों के पास मुहाजिरीन में से एक सहाबी हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु थे। हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु के विषय में यह घटना मैंने पहले वर्णन भी की है। उन्होंने जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आवाज़ सुनी तो वह घर के अंदर छिप गए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु घर में दाख़िल हुए तो कहा तुम क्या पढ़ रहे थे? यह क्या आवाज़ थी जो मैंने तुम्हारी तरफ़ से सुनी है? इस वक़्त वे लोग सूरत ताहा पढ़ रहे थे। उन्होंने कहा एक बात के अतिरिक्त कुछ नहीं था जो हम आपस में कर रहे थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैंने सुना है कि तुम दोनों अपने दीन से मुनहरिफ़ हो गए हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के बहनोई ने कहा उमर रज़ियल्लाहु अन्हु! क्या तुम ने कभी ग़ौर किया है कि हक़ तुम्हारे दीन के अतिरिक्त दूसरे धर्म में हो। सच्चाई की तलाश करनी है नां तो कभी तुमने ग़ौर किया है कि शायद दूसरे धर्म में सच्चाई हो। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बहनोई को पकड़ लिया और सख़्ती से मार पीट की। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन अपने पति को बचाने के लिए आईं तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उन पर भी हाथ उठा दिया जिस से उनके चेहरे से (बहन के चेहरे से) ख़ून बहने लगा। उन्होंने ग़ुस्सा से कहा हे उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यदि सच्चाई तेरे दीन के अतिरिक्त किसी और दीन में है तो तू गवाही दे कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और गवाही दे कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु असहाय हो गए तो कहने लगे कि मुझे वह किताब दो जो तुम्हारे पास है ताकि में उसे पढ़ूं और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु पढ़ना जानते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हु की बहन ने कहा कि तुम अपवित्र हो और उसे कोई अपवित्रता की हालत में नहीं छू सकता। अत: उठो और स्नान करो या वुज़ू कर लो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उठ कर वुज़ू किया। फिर किताब लेकर पढ़ने लगे वो सूरत ताहा थी। जब इस आयत पर पहुंचे कि اِنَّنِیۡۤ اَنَا اللّٰہُ لَاۤ اِلٰہَ اِلَّا اَنَا فَاعۡبُدۡنِیۡ ۙ وَ اَقِمِ الصَّلٰوۃَ لِذِکۡرِیۡ (सूरत ताहा : 15) निसंदेह मैं ही अल्लाह हूँ मेरे अतिरिक्त और कोई उपास्य नहीं। अत: मेरी इबादत कर और मेरे वर्णन के लिए नमाज़ को क़ायम कर। इस आयत को पढ़ने के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पता बताओ। यह बात सुनकर हज़रत ख़ब्बाब रज़ियल्लाहु अन्हु भी घर से निकले और कहने लगे कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु! तुम्हें ख़ुशख़बरी हो। मेरी ख़ाहिश है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गुरूवार की रात की दुआ तुम्हारे हक़ में स्वीकार हो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि اَللّٰھُمَّ أَعِزَّ الۡاِسۡلَامَ بِعُمَرَ بۡنِ الۡخَطَّابِ اَوۡ بِعَمۡرِو بۡنِ ھِشَامٍ कि हे अल्लाह इस्लाम को उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु या अम्र बिन हिश्शाम के द्वारा से सम्मान दे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त इस घर में थे जो कोहे-ए-सफ़ा के दामन में था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु चले यहां तक कि उस घर में दाख़िल हुए। उस वक़्त घर के दरवाज़े पर हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत तल्हा रज़ियल्लाहु अन्हु और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अन्य सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु थे। हज़रत हम्ज़ा रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको देखा कि यह लोग उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से डर रहे हैं तो उन्होंने कहा कि अच्छा तो यह उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। यदि अल्लाह उनको ख़ैर से लाया है तो यह इस्लाम स्वीकार करके रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पैरवी करेंगे और यदि इसके अतिरिक्त कोई और इरादा हो तो उनको क़तल करना हम पर आसान है। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर के अंदर थे और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर वह्यी का नुज़ूल हो रहा था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी बाहर निकले और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए और उनको सीने से पकड़ा और फ़रमाया उमर रज़ियल्लाहु अन्हु! क्या तुम उस वक़्त तक बाज़ नहीं आओगे जब तक कि अल्लाह तुम पर रुस्वाई और दर्दनाक अज़ाब नाज़िल न कर दे जिस तरह वलीद बिन मुग़ीरह के लिए नाज़िल किया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला से दुआ की। अल्लाह! यह उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु हैं। हे अल्लाह दीन को उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा सम्मान दे। इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा मैं गवाही देता हूँ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अल्लाह के रसूल हैं और इस्लाम स्वीकार कर लिया और कहने लगे हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस्लाम की इशाअत के लिए बाहर निकलें।

मअमर और ज़ुहरी से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दारे अर्कम में आने के बाद इस्लाम स्वीकार किया और दारे अर्कम में मुस्लमान होने वाले चालीसवें या चालीस से कुछ ज़्यादा पुरुष और महिलाओं के बाद इस्लाम स्वीकार करने वाले थे। दारे अर्कम वह घर या मर्कज़ है जो एक नौ मुस्लिम अर्क़म बिन अर्क़म का मकान था और मक्का से ज़रा बाहर था। वहां मुस्लमान जमा होते थे और यह दीन सीखने और इबादत इत्यादि करने के लिए एक मर्कज़ था और इसी पवित्रता की वजह से उसका नाम "दारुस्सलाम" भी प्रसिद्ध हुआ और यह मक्का में तीन वर्ष तक मर्कज़ रहा। वहीं ख़ामोशी से इबादत किया करते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मजलिसें लगा करती थीं और फिर जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस्लाम स्वीकार किया तो फिर खुल कर बाहर निकलना शुरू किया। रिवायत में आता है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु इस मर्कज़ में इस्लाम लाने वाले अंतिम व्यक्ति थे जिनके इस्लाम लाने से मुस्लमानों को बहुत मदद पहुंची और वे दारे अर्क़म से निकल कर खुले रूप में तब्लीग़ करने लग गए।

(अल-तबकातुल कुबरा भाग -3 पृष्ठ 142-143 प्रकाशन दारुल अहया तुर्रास अरबी बेरूत 1996ई.) (उद्धरित सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 129)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने की यही घटना थोड़े से मतभेदों के साथ एक और जगह भी मिलता है। इस जगह सूरत ताहा की आरंभि आयात का वर्णन है जबकि दूसरी जगह सूरत हदीद की आरंभिक आयात का वर्णन है जिनकी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी बहन के घर में तिलावत की थी। (ओसोदुल ग़ाबा भाग 4 पृष्ठ 140 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2003 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम लाने के बारे में एक छेवीं रिवायत भी है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन करते हैं कि एक दिन इस्लाम स्वीकार करने से पहले मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तलाश में निकला तो मैंने देखा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुझ से पहले मस्जिद में पहुंच गए हैं। मैं आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पीछे खड़ा हो गया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सूरत अलहाका की तिलावत शुरू की। मैं क़ुरआन-ए-करीम की बनावट और तरकीब से आश्चर्रित हुआ और मैंने कहा ख़ुदा की कसम यह तो शायर है जैसा कि क़ुरैश कहते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि जब मैंने यह सोचा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने اِنَّہٗ لَقَوۡلُ رَسُوۡلٍ کَرِیۡمٍ ۙ وَّ مَا ھُوَ بِقَوۡلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِیۡلًا مَّا تُؤۡمِنُوۡنَ(الحاقة:41-42) وَ مَا ھُوَ بِقَوۡلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِیۡلًا مَّا تُؤۡمِنُوۡنَ की तिलावत फ़रमाई। अर्थात निसंदेह यह सम्मान वाले रसूल का कथन है और यह किसी शायर की बात नहीं। बहुत कम है जो तुम ईमान लाते हो। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि मैंने कहा कि यह तो काहिन है, जादूगर है। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह पढ़ा कि وَلَا بِقَوۡلِ کَاھِنٍ ؕ قَلِیۡلًا مَّا تَذَکَّرُوۡنَ ؕ تَنۡزِیۡلٌ مِّنۡ رَّبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ؕ وَلَوۡ تَقَوَّلَ عَلَیۡنَا بَعۡضَ الۡاَقَاوِیۡلِ ۙ لَاَخَذۡنَا مِنۡہُ بِالۡیَمِیۡنِ ۙ ثُمَّ لَقَطَعۡنَا مِنۡہُ الۡوَتِیۡنَ ۙ فَمَا مِنۡکُمۡ مِّنۡ اَحَدٍ عَنۡہُ حٰجِزِیۡنَ ؕ (الحاقة: 43تا48) तो फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस सूरत की आख़िर तक तिलावत फ़रमाई और इसका अनुवाद यह है। और न यह कि यह किसी काहिन का कथन है। बहुत कम है जो तुम नसीहत पकड़ते हैं। एक इल्हाम है समस्त संसारों के रब की तरफ़ से और यदि वह कुछ बातें झूठी हम पर सम्बोधित कर देता तो हम उसे ज़रूर दाहने हाथ से पकड़ लेते। फिर हम निसंदेह उस कीरगे जान काट डालते। फिर तुम में से कोई एक भी इस से हमें रोकने वाला न होता। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि उस वक़्त से इस्लाम मेरे दिल में घर कर गया।

(मस्नद अहमद बिन हम्बल भाग 1 पृष्ठ 108- 109 मस्नद उमर बिन ख़त्ताब हदीस 107 प्रकाशन आलेमुल क़ुतुब बेरूत 1998 ई.)

और एक सातवीं रिवायत भी मिलती है जो बुख़ारी की रिवायत है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने वर्णन किया है कि मैंने जब भी हज़रत उमर को किसी चीज़ के बारे में यह कहते हुए सुना कि मेरा ख़्याल है कि यह ऐसे है तो वो वैसे ही होती है जैसा कि वह समझा करते थे। एक-बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु बैठे हुए थे कि उनके पास से एक ख़ूबसूरत व्यक्ति गुज़रा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा कि शायद मेरा गुमान ग़लत हो या तो यह व्यक्ति जाहिलियत वाले अपने दीन पर है या यह उन लोगों का काहिन था। इस

व्यक्ति को मेरे पास लाओ। इस लिए उसे आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पास बुला कर लाया गया तो उन्होंने उस व्यक्ति से वही कहा। उसने कहा कि मैंने आज की भांति कोई दिन नहीं देखा जिसमें किसी मुस्लमान व्यक्ति का यूं स्वागत किया गया हो। यह व्यक्ति बाद में मुस्लमान हो गया था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया: मैं कसम देता हूँ कि तुम्हें मुझे ज़रूर बताना होगा। उसने कहा कि मैं ज़माना-ए-जाहिलियत में उनका काहिन था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कोई बहुत अजीब बात जो तुम्हारी जिन्नी तुम्हारे पास लाई हो। काहिन थे जादू करते थे। कोई जिन्नी तुम्हारे पास कोई अजीब बात लाई हो। उसने कहा कि एक दफ़ा जबकि मैं बाज़ार में था कि वह मेरे पास आई तो मैंने उस में घबराहट मालूम की। उस जिन्नी ने कहा। क्या तुमने जिन्नों को नहीं देखा और उनकी परेशानी और हैरत को और ऊंटनियों और उनके पालानों से उनके जा मिलने को। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुम ने सच्च कहा। एक-बार में उनके बुतों के पास सोया हुआ था कि एक व्यक्ति गाय का बछड़ा लाया और उसने उसे ज़िबाह किया तो एक आवाज़ देने वाले ने चीख़ लगाई। मैंने उस से ऊँची आवाज़ में चीख़ने वाला कभी नहीं सुना। वह कह रहा था कि हे हद से बढ़े हुए दुश्मन! एक बा-मुराद और उम्दा काम है। एक अच्छे वर्णन बाला व्यक्ति है वह कहता है لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ अर्थात तेरे अतिरिक्त कोई इबादत के लायक़ नहीं। इस पर लोग उठे। मैंने कहा मैं नहीं निकलूँगा यहां तक कि मैं जान लूं कि इसके पीछे कौन है। फिर आवाज़ आई अहद से बढ़े दुश्मन! एक बा-मुराद और उम्दा काम है। एक अच्छा वर्णन करने वाला व्यक्ति है वह कहता है لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ अर्थात तेरे अतिरिक्त कोई इबादत के लायक़ नहीं। इस पर मैं भी खड़ा हो गया। ज़्यादा अरसा नहीं गुज़रा था कि कहा जाने लगा कि यह नबी हैं। बुख़ारी के कुछ नुस्ख़ों में लिऐ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ की जगह لَا اِلٰهَ اِلَّا اللہ भी आता है। तो यह बुख़ारी की रिवायत है।

(सही बुख़ारी किताब मनाक़िब इल्ला अंसार बाब इस्लाम उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु, हदीस 3866)

बहरहाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने के बारे में तारीख़-और-सीरत की पुस्तकों में विभिन्न रिवायतें मिलती हैं और उनमें सबसे प्रसिद्ध अर्थात जो अक्सर पुस्तकों में वर्णित है वह वही रिवायत है जिसमें हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तलवार लेकर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नऊज़ूबिल्लाह (हम इस से ख़ुदा की शरण चाहते हैं) क़तल करने के लिए निकले थे तो रास्ते में किसी ने बताया कि अपने घर की ख़बर लें, तो आप अपने बहन और बहनोई के घर गए और यही रिवायत ज़्यादा-तर मानी जाती है और इस का ही अक्सर जगहों पर वर्णन है। जबकि बेशुमार रिवायतें और भी हैं जो मैं ने वर्णन की हैं। बहरहाल मैं ने जो रिवायतें वर्णन की हैं अपनी-अपनी इन रिवायतों को जिन्हों ने भी सेहत पर समझा है, इतिहासकारों ने भी और सीरत लिखने वालों ने भी, इस पर बड़ी बहसें की हैं लेकिन बहरहाल हम तो उसी रिवायत को सही मानते हैं जो बहन और बहनोई के घर वाला मुआमला था और फिर वहां से दारे अर्क़म में आप रज़ियल्लाहु अन्हु गए। यह कहा जा सकता है और यह अधिक सम्भावना है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के इस्लाम स्वीकार करने की वर्णित समस्त रिवायते ही अपनी जगह दरुस्त हों जिनसे यह नतीजा निकलता है कि विभिन्न अवसरों पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के दिल में तबदीली के वाक़ियात होते रहे। कई दफ़ा तबदीली के वाक़ियात होते रहते हैं लेकिन अंतिम क़दम नहीं उठाया जाता और अंतिम घटना वही हुआ जब अपनी बहन और बहनोई के घर में क़ुरआन-ए-करीम सुना और इस्लाम स्वीकार करने के लिए दरबारे रिसालत में हाज़िर हो गए। बहरहाल अल्लाह बेहतर जानता है।

"हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की आयु उस वक़्त तेंतीस वर्ष की थी और आप अपने क़बीला बनू अदी के रईस थे।" जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने बैअत की है, इस्लाम स्वीकार किया है तो "क़ुरैश में सिफ़ारत का ओहदा भी उन्ही के सपुर्द था।'' और वैसे भी निहायत प्रभावी और बहादुर और दिलेर थे। उनके इस्लाम लाने से मुस्लमानों को बहुत मदद पहुंची और उन्होंने दार-ए-अर्क़म से निकल कर बरमला मस्जिद हराम में नमाज़ अदा की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अंतिम सहाबी थे जो दारे अर्क़म में ईमान लाए और यह बेअसत नब्वी के छटे वर्ष के अंतिम माह की घटना है। उस वक़्त मक्का में मुस्लमान मर्दों की संख्या चालीस थी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 159)

शेष इस बारे में इंशा-ए-अल्लाह आगे वर्णन करूँगा।

इस वक़्त में कुछ देहान्त पाने वालों का वर्णन करना चाहता हूँ जिनका जनाज़ा पढ़ाऊंगा। इस में पहले अहमद मुहम्मद उसमान शबूती साहब हैं जो मुहम्मद उसमान शबूती साहब आफ़ यमन के बेटे थे। 9 अप्रैल 2021ई. को सत्तासी वर्ष की आयु में मिस्र में उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन

अहमद मुहम्मद उसमान शबूती साहब का जन्म यमन के शहर अदन में हुआ था। जब आदरणीय ग़ुलाम अहमद साहब मुबल्लिग़ अदन गए हैं तो उस वक़्त शबूती साहब ने चौदह वर्ष की आयु में बैअत की थी। फिर इसके बाद आपको जमात अहमदिया यमन में विभिन्न ओहदों पर काम करने की तौफ़ीक़ मिली और एक लम्बे समय से बहैसीयत सदर जमात अहमदिया यमन ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे थे यहां तक कि उनकी वफ़ात हो गई अर्थात वफ़ात तक इस ओहदे पर क़ायम थे। आपकी शादी आदरणीया वसीमा मुहम्मद साहबा पुत्री डाक्टर मुहम्मद अहमद अदनी साहब से हुई जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत हाजी मुहम्मद दीन साहब देहलवी और सहाबिया हज़रत हसीना बी-बी साहिबा रज़ियल्लाहु अन्हु तआला अन्हुमा की पोती हैं। शबूती साहब का निकाह भी फिर रब्वाह में ही हुआ था लेकिन गैरहाज़िरी में हुआ था। बहरहाल फिर उनका मर्कज़ से संबंध पैदा हुआ। शबूती साहब को रब्वाह जाने की भी तौफ़ीक़ मिली और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात का भी सोभाग्य प्राप्त हुआ। बुज़ुर्गों से भी वहां मिले, सहाबा से भी मिले। शबूती साहब ने बर्तानिया की अत्यधिक यूनीवर्सिटीयों से नर्सिंग और हैल्थ मैनिजमंट में आला शिक्षा प्राप्त की और लीवरपूल यूनीवर्सिटी से हैल्थ ऐडमिनिस्ट्रेशन में मास्टर्ज़ की डिग्री की। यमन सेंट्रल हैल्थ इंस्टीटियूट के Dean के ओहदे समेत सेहत के मैदान में तक़रीबन उनत्तीस वर्ष तक अत्यधिक ओहदों पर निर्धारित रहे।मध्य पूर्व के देशों के अतिरिक्त अन्य कई देशों में आलमी विभाग सेहत के आरिज़ी मुशीर के तौर पर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। कुछ समय से बीमार थे और कुछ माह से मिस्र में मुंतक़िल हो गए थे और कोशिश यह थी कि यहां यू.के आ जाऐं। वहां ईलाज भी हो रहा था लेकिन फिर ज़्यादा बीमारी की वजह से कुछ दिन हस्पताल में रह अंतत: 9 अप्रैल को अपने ख़ुदा के हुज़ूर हाज़िर हो गए। मरहूम मूसी थे। उनकी पत्नी के अतिरिक्त एक बेटे मुहम्मद शबूती अमरीका में डाक्टर और तीन बेटियां हैं, पोते पोतीया, नवासे नवासीयाँ हैं। बड़ी बेटी तो यमन में हैं। एक बेटी जर्मनी में हैं और मर्वा शबूती साहिबा हमारे यहां यू.के में हैं। एम.टी.ए अल् अरबिया मैं ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रही हैं।

उनकी बेटी मर्वा शबूती कहती हैं कि यह दरुस्त है कि जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है लेकिन मैंने अपने बाप से भी माओं जैसी शफ़क़त पाई। या इस प्रकार कहिए कि मुझे बाप के और माँ के प्यार में कभी अंतर महसूस नहीं हुआ। कहती हैं मेरे पिता मुत्तक़ी, नेक, आला अख़लाक़ के मालिक, निहायत आजिज़ और विनीत थे। सब्र-ओ-सिदक़ और अमानत का उदाहरण थे, गरीबों का ख्याल रखने वाले और समस्त लोगों से बल्कि इन्सानियत से मुहब्बत करने वाले थे और यह बहुत से लिखने वालों ने लिखा है। ग़ैरों ने भी जो उनके जानकार थे यही बातें लिखी हैं। अपने काम को अत्यधिक ध्यान से किया करते थे। वक़्त की पाबंदी और वादों को पूरा करने वाले थे। अक्सर इबादत-ओ-नवाफ़िल अदा करते थे और फ़र्ज़ नमाज़ों की पाबंदी का बहुत ख़्याल रखते थे। कहती हैं कि 2002 ई.में उनको, उनके दोनों माँ बाप को हज बैतुल्लाह की भी सआदत नसीब हुई।

यमन के क़ायमक़ाम सदर जमात ख़ालिद अली अलसबरी साहब कहते हैं मरहूम वृद्धावस्था के अतिरिक्त रोबदार शख़्सियत के मालिक थे। नेक दिल, हमेशा मुस्कुराने वाले, सख़ी और मेहमान नवाज़ थे। हर अहमदी से मेहरबान बाप की तरह व्यवहार करते थे। जब भी कोई जमाती ज़रूरत होती तो अपनी ज़ाती जेब से ख़र्च करते और जमाती प्रयोग की चीज़ें जैसे प्रिंटर और फैक्स मशीन इत्यादि ख़ुद ही ख़रीदते थे। ग़रीब लाचारों के लिए बड़े ही रहम दिल और शफ़क़त करने वाले थे। हर ग़रीब अहमदी पर दिल खोल कर ख़र्च किया करते थे। अहमदी यतीमों और विधवाओं की देख भाल करते थे। जंग से प्रभावित एक फ़ैमिली के मकान का किराया भी ख़ुद जेब से अदा करते थे। बड़ी आयु के अतिरिक्त उन्होंने 2018 ई. में अदन से सना का बीस घंटे की लम्बी और कठिन यात्रा की जबकि सऊदी हमलों की वजह से रास्ता निहायत ख़तरनाक था और जगह-जगह चैकिंग भी होती थी। बुढ़ापे के कारण उन के लिए चलना भी मुश्किल था। उन्होंने यह यात्रा केवल

सना जमात के साथ ईद पढ़ने और ग़रीब फ़ैमिलियों को ईदी देने और उनकी ख़ुशी में शरीक होने के लिए की था। समस्त जमाअत के लोग उस वक़्त उनकी आमद से ख़ुश हुए।

अगला वर्णन आदरणीय क़ुरैशी ज़काउल्ला साहब का है जो दफ़्तर जलसा सालाना के एकाऊंटैंट थे। यह भी 9 अप्रैल को सतासी वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

क़ुरैशी साहब के ख़ानदान में अहमदियत उनके नाना और उनकी पत्नी के दादा हज़रत ख़ुरशीद अली साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के द्वारा से आई थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम जब सियालकोट तशरीफ़ लाए तो हज़रत ख़ुरशीद अली साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने सोला वर्ष की आयु में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का सौभाग्य प्राप्त किया था। क़ुरैशी साहब की पत्नी वफ़ात पा चुकी हैं। पाँच बेटियां और एक बेटा है। और बेटा हाफ़िज़-ए-क़ुरआन है। यहीं यू.के में रहते हैं। एक बेटी दफ़्तर पी ऐस रब्वाह के हमारे कर्मचारी की पत्नी हैं। दूसरी बेटी मेनचेस्टर में हैं। एक बेटी वफ़ात पा चुकी हैं।

1954 ई. में उन्होंने जमाती ख़िदमात का आरम्भ किया। हज़रत साहबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु सदर निगरान बोर्ड के ज़ेर-ए-साया उन्होंने बतौर रिलीवनग क्लर्क के काम किया। 58 वर्ष से ऊपर उन्होंने सदर अंजुमन अहमदिया रब्वाह की मुलाज़मत की। उनके बेटे हाफ़िज़ शम्सुल ज़ुहा कहते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ उन्हें काम का अवसर मिला और हज़रत मियां बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के घर जाया करते थे। एक दिन घर गए तो शुरू में पहले दिन हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको कहा कि तशरीफ़ रखें तो कहते हैं मैंने कहा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की औलाद के सामने मैं किस तरह बराबरी पर बैठ सकता हूँ। उस पर हज़रत मियां बशीर अहमद साहब रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया اَلْاَمْرُ فَوْقَ الْاَدَبِ। अर्थात हुक्म अदब और एहतिराम पर फ़ौक़ियत रखता है। इस पर वह बैठ गए। बड़ा एहतिराम था। कहते हैं मेरे पिता साहब ख़ामोश-तबीअत के मालिक थे। पाचों समय की नमाज़ बाजमाअत के पाबंद तो थे ही, तहज्जुद का इल्तिज़ाम करते थे। देहान्त पाने वाले की तरफ़ से चंदो की अदायगी करते थे। ख़ानदान के बुज़ुर्गों को अपने घर रख कर उनकी ख़िदमत किया करते थे। कुछ की वफ़ात भी हमारे घर में हुई। ख़िलाफ़त से बहुत वफ़ा और प्यार का संबंध था और हम में भी इस को यक़ीनी बनाने की कोशिश करते थे। कहते हैं बचपन में मुझे नमाज़ पर साथ ले जाते और अक्सर रास्ते में यही कहा करते थे कि जब भी कोई ख़लीफ़ा वक़्त तुम्हें काम के लिए पुकारें तो हमेशा तैयार रहना। और कुछ ग़रीबों के घरों के अख़राजात भी उन्होंने उठाए हुए थे। उनकी बेटी अम्तुल सलाम कहती हैं कि मेरे पिता साहब ने अपनी ज़ाती जायदाद से एक कनाल प्लाट मुहल्ला नसीर आबाद सुलतान रब्वाह में मस्जिद की तामीर की उद्देश्य से सदर अंजुमन अहमदिया के नाम भेंट किया था। एक माह में दो मर्तबा साधारणता क़ुरआन-ए-करीम ख़त्म किया करते थे। पाँच बेटियां और एक बेटा था सब बहन भाईयों को अच्छी तरह पढ़ाया लिखाया। उनकी अच्छी तर्बीयत की।

अगला वर्णन आदरणीय मलिक ख़ालिक़ दाद साहब कैनेडा का है जो 85 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके नाना हज़रत-ए-शैख़ नूर उद्दीन साहब व्यापारी क़ादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे और आपके दादा आदरणीय मौला दाद साहब को हज़रत ख़लीफ़ तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हु के हाथ पर बैअत करके अहमदियत में दाख़िल होने की तौफ़ीक़ मिली। लंबा अरसा कराची में बतौर सदर हलक़ा उनको ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। कैनेडा में विभाग माल में ख़िदमत बजा लाते रहे। नमाज़ क़ुरआन के पाबंद, हमदरद, शफ़ीक़, गरीबों का ख्याल रखने वाले, नेक, मुख़लिस और बावफ़ा इन्सान थे। चंदों की अदायगी और माली तहरीकात में हिस्सा लेने के लिए हमेशा आगे आगे रहते थे। ख़िलाफ़त के साथ अक़ीदत का वालेहाना संबंध था और यह मैंने भी उनमें देखा है। ख़िलाफ़त के लिए ग़ैरमामूली संबंध का इज़हार था। मरहूम अल्लाह के फ़ज़ल से आरंभ में वसीयत करने वालों में से थे। पीछे रहेने वालों में पत्नी के अतिरिक्त चार बेटे और तीन बेटियां हैं। एक बेटे उनका कैनेडा की नैशनल आमिला मैं ख़िदमत कर रहा हैं।

अगला वर्णन मुहम्मद सलीम साबिर साहब का है जो नज़ारत अमुर-ए-आमा के कर्मचारी थे। 27 मार्च को 77 वर्ष की आयु में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। सलीम साबिर साहब के ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता हज़रत मियां नूर मुहम्मद साहब सहाबी हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के द्वारा आई थी। उनके पिता क़ादियान के निकट वंजवां नामी गांव के रहने वाले थे और उन्होंने 1903 ई. में ख़ुद क़ादियान जा कर हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की थी। 19 मई 1962 ई. से सदर अंजुमन अहमदिया में उनका तक़र्रुर हुआ। इस के बाद 1968 ई. में दीवान से दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी में उनका ट्रांसफ़र हो गया, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रज़ियल्लाहु अन्हु ने ख़ुद उनको अपने दफ़्तर के लिए मुंतख़ब किया। फिर 87 ई. से लेकर 06 तक अमुर-ए-आमा में मुहतसिब रहे। उनका अरसा ख़िदमत तक़रीबन 59 वर्ष बनता है।

मरहूम मूसी थे। उनके भतीजे और दामाद कहते हैं कि तहज्जुद के आदी थे। नमाज़ों में साधारणता और तहज्जुद में विशेषता इतनी दर्द से दुआएं करते थे कि इन्सान जो साथ बैठा था उस का भी दिल पिघल जाता था। नई नसल को बाक़ायदगी से ख़लीफ़-ए-वक़्त की इताअत का पाठ देने वाले, अपने दफ़्तरी औक़ात के अतिरिक्त भी दफ़्तर को वक़्त देने वाले, जमात के किसी भी व्यक्ति के दुख को अपना समझने वाले, लोगों की मुश्किलात को अपनी मुश्किलात समझने वाले और लोगों के मसायल को ख़लीफ़-ए-वक़्त की इताअत और जमाअत की इताअत को सामने रख कर हल करने वाले, हर लम्हा दुरूद शरीफ़ का विर्द करने वाले, ख़ामोशी से गरीबों की मदद करने वाले बेशुमार ख़ूबीयों के मालिक थे।

अगला वर्णन आदरणीया नईमा लतीफ़ साहबा का है जो साहबज़ादा महदी लतीफ़ साहब अमरीका की पत्नी थीं। 10 मार्च को उनकी वफ़ात हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

मरहूमा के पति आदरणीय साहबज़ादा महदी लतीफ़ साहब हज़रत साहबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहब शहीद रज़ियल्लाहु अन्हु के पोते हैं। मरहूमा ने 1969 ई. में पिशावर यूनीवर्सिटी से Botany में मास्टर्ज़ की डिग्री प्राप्त की। फिर रिसर्च इंस्टीटियूट पिशावर के बॉटनी डिपार्टमैंट में रिसर्च का काम शुरू किया। 1972 ई. तक इस से जुड़ी रहीं। 1970 ई. में हज़रत ख़लीफ़ उल-मसीह सालिस रज़ियल्लाहु अन्हु की तहरीक पर नुसरत जहां के तहत अपने आपको वक़्फ़ किया। उनके छोटे भाई सईद मलिक साहब भी नाईजेरिया रवाना हुए और 1975 ई. तक वहां क़ियाम रखा और इस दौरान आप वूमन अरबिक टीचरज़ कॉलेज गुसाओ Women Arabic Teachers College Gusau) की प्रिंसिपल के तौर पर ख़िदमत बजा लाती रहीं। 1975 ई. में अमरीका के लिए रवाना हो गईं। यहां फिर आपने यूनीवर्सिटी आफ़ नेब्रास्का (University of Nebraska) के बॉटनी डिपार्टमैंट में रिसर्च के तौर पर काम किया। फिर वहां से मेरीलैंड आ गईं। यहां मेरीलैंड में लगातार लजना में आपको ख़िदमात का अवसर मिला और अमरीका की नायब सदर लजना के तौर पर भी ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। वाशिंगटन लजना की सदारत के फ़रायज़ भी सरअंजाम दिए। बहुत मुहब्बत करने वाली, दूसरों के दुख-दर्द में शामिल होने वाली महिला थीं। मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहेने वालों में पति के अतिरिक्त चार भाई और दो बहनें शामिल हैं। उनकी औलाद नहीं है। एक भाई नायब अमीर अमरीका हैं और एक दारुल कज़ा अमरीका में काम कर रहे हैं।

अगला वर्णन सफिया बेग़म साहबा पत्नी मुहम्मद शरीफ़ साहब कैनेडा का है जो 80 वर्ष की उमर में 11 मार्च को वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। आप आदरणीय मौलवी चिराग़ दीन साहब साबिक़ मुरब्बी सिलसिला पेशावर की बड़ी बेटी थीं। वाह कैन्ट में लंबा अरसा सदर लजना के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। उनके पति 1993 ई. में एक ऐक्सिडन्ट में फ़ौत हो गए थे। पति की वफ़ात के बाद बच्चों की बेहतरीन तर्बीयत की। नमाज़ क़ुरआन की पाबंद, तहज्जुद गुज़ार, साबिर और शाकिर महिला थीं। मिलनसार बहुत ज़्यादा थीं। नेक दिल और हमदरद महिला थीं। वसीयत भी उन्होंने 1/3 हिस्सा की की हुई थी। पीछे रहेने वालों में चार बेटियां और एक बेटा शामिल है। आपके सब बच्चे किसी न किसी रंग में जमाअत की ख़िदमत की तौफ़ीक़ पा रहे हैं। अल्लाह तआला इन सब देहान्त पाने वाले से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए, दर्जात बुलंद फ़रमाए।

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

कहा जा रहा है कि देश की इकॉनोमी बेहतर है और unemployment कम हो रहा है। जब कि स्थिति यह है कि नौजवानों को कम नौकरियाँ मिल रहीं हैं और बड़ी आयु के लोगों को ज़्यादा लाभ मिल रहा है। नौजवानों और लोकल लोगों के ज़हन में यह बात है कि हुकूमत प्रवासियों और बड़ीआयु के लोगों को ज़्यादा बेनेफिटस देती है और हम को कम देती है। अब यू.के में केवल एशीयन प्रवासी नहीं हैं बल्कि ईस्ट यूरोपीयन देशों के प्रवासियों का भी प्रश्न पैदा हो गया है। यह भी बड़ी संख्या में आ रहे हैं।

हुज़ूर ने फ़रमाया मैं तो यूरोप वालों को पहले से कह रहा हूँ कि प्रवासियों को सँभालने के लिए उनको कोई रोल अदा करना चाहिए जो लोग ISIS की ओर जा रहे हैं वे frustration के कारण से है फिर जब ये पश्चिमी देश देखते हैं कि हमारे देश के नौजवान वहां जा कर लड़ रहे हैं तो उन्हें यह भय महसूस होता है कि अब ये लोग हमारे मुल्क में भी उपद्रव पैदा करेंगे।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया फिर यह भी वर्णन हुआ है कि जर्मनी में जिस क्षेत्र में मुस्लमान ज़्यादा हैं वहां जो नेशलिस्ट पार्टीयां हैं उनको वोट नहीं मिलता। इस नीति से नुक़्सान होगा और लोगों का प्रतिक्रिया एशीयन प्रवासियों के विरुद्ध हो जाएगी।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अब इन हालात में यही दुआ है कि जो लेफ़्टिस्ट (Leftist) हैं ये ऊपर आ जाऐं और हालात को बेहतर करें। इस पर मौसूफ़ Dr.Gysi ने कहा कि मैं आशा करता हूँ कि हुज़ूर की दुआ स्वीकार होगी और हम ऊपर आएँगे।

मेहमान ने कहा कि अमरीका बहुत से मुआमलात में ग़लत नीतियाँ अपनाए हुए है। ये कुछ समूहों और तन्ज़ीमों को अपने साथ मिला कर अपने मुशतर्का दुश्मन के विरुद्ध कार्रवाई करता है और बिना यह देखे कि जिन समूहों को अपने साथ मिलाया है और उनकी सहायता की है वही कल उस के साथ क्या व्यवहार करते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया अमरीका ने रशिया के विरुद्ध अलक़ायदा की सहायता की थी अब वही अलक़ायदा अमरीका के विरुद्ध हो गई है।

मेहमान ने कहा कि अब तो प्रत्येक जगह हालात और बिगड़ रहे हैं। लीबिया, सोमालीया, इराक़, शाम, यमन, यूक्रेन प्रत्येक जगह फ़साद है और अमन नहीं रहा। हर जगह तबाही है। प्रश्न यह है कि हम किस तरह इस स्थिति से बाहर निकलें और किस तरह उन देशों में अमन क़ायम किया जा सकता है। और फ़लस्तीनी रियासत को किस तरह क़ायम किया जा सकता है। मेरे पास इन सवालों का कोई उत्तर नहीं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आपके पास इस का उत्तर है मैंने पिछली वर्ष भी कहा था और इस वर्ष भी अपने ऐडरैसिज़ और प्रोग्रामों में कहा है कि ISIS की स्पलाई लाईन बंद करो। उनकी स्पलाई लाईन काटो उनका सारा असलाह और हथियार कहाँ से जा रहे हैं। उनका तेल दूसरे मुल्कों में कहा से जा रहा है उनको बड़ी बड़ी रक़ूम कहाँ से प्राप्त हो रही हैं।

सिक्योरिटी कौंसल ने एक रैज़ोलीयूशन भी पास किया था कि उनकी स्पलाई लाईन काटी जाए परन्तु इस पर अमल नहीं हुआ।

ईरान पर पाबंदीयां लग सकती हैं तो उन पर क्यों नहीं लग सकतीं। इस पर मेहमान ने कहा कि बिल्कुल उचित है रूस पर पाबंदियां लगती हैं परन्तु इन तन्ज़ीमों पर नहीं लगतीं।

फ़लस्तीन के हवाला से हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया उसकी सीमा रेखा निर्धारित कर दी गई थी और यह समझौता हुआ था कि इस्राईल और अधिक ENCROACHMENT नहीं करेगा। परन्तु इस समझौता के विरुद्ध ENCROACHMENT होती चली गई।

मिस्र ने इसराईल से लड़ाई की तो उसका परिणाम आज तक फ़लस्तीन भुगत रहा है। फिर जज़् बुल्लाह लेबनान में ज़्यादा हैं। उनकी ओर से इसराईल के विरुद्ध कोई कार्रवाई होती है तो उसका परिणाम भी फ़लस्तीन को भुगतना पड़ता है। अब प्रश्न यह है कि इस को स्वीकार करें। स्वीडन ने उसको स्वीकार किया तो शोर मच गया था। अब दूसरा step स्पेन ने उठाया है इस मसला का हल यही है कि फ़लस्तीन को एक आज़ाद state बना लें और एक देश के तौर पर उसका हक़ क़ायम हो।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया परन्तु कोई बैठ कर उसका हल निकालना नहीं चाहता और हमारी आवाज़ जितनी पहुंच सकती है हम पहुंचाने का प्रयास करते हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया हमारा संदेश, हमारी आवाज़ तो प्रत्येक जगह पहुंच रही है और यह एहसास प्रत्येक जगह हो रहा है कि मिल कर बैठना चाहिए और अमन क़ायम रहना चाहिए।

उन्हों ने प्रश्न किया कि क्या हम तीसरी जंग-ए-अज़ीम से बच सकेंगे। इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया जब इन्सान इन्सान से अत्याचार कर रहा हो और दूसरे के हुक़ूक़ नष्ट किए जा रहे हों तो फिर ख़ुदा की क़ुदरत अपना हाथ दिखाती है। जब ख़ुदा का क़ानून काम करता है तो फिर इन्सान तबाह होता है। नेचर तबाह नहीं होता।

मेहमान ने निवेदन किया कि सालाना कई मिलियन लोग भूक से मरते हैं जब कि हमारे पास इतनी ख़ुराक उपस्थित है कि हम वर्ष में दो दफ़ा उन भूक में ग्रस्त लोगों को ख़ुराक प्रदान कर सकते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया लाखों लोगों की भूक मिटाने के बजाय यदि ख़ुराक को समुंद्र में डालेंगे तो फिर यही हाल होगा। सियासतदानों को इस बात की समझ नहीं आती कि यदि भूक, ग़ुर्बत को नहीं मिटाया गया तो फिर यही लोग उनके विरुद्ध खड़े हो जाएंगे।

मेहमान ने कहा कि हमारे जर्मन में यह स्थिति है कि जो ग़रीब वर्ग है वह सबसे कम संख्या में वोट डालने जाता है।

इस पर हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया वर्ष 2007 तक यहां ख़ुदकुशी का रेट कम था। इस के बाद बढ़ना शुरू हो गया है। यह frustration और लोगों की बेचैनीयां हैं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया एक बुराई को रोकते हैं तो दूसरी बुराई आ जाती है। UNO को बुराईयां रोकने के लिए बनाया गया था परन्तु उसने बुराईयां पैदा कर दीं।

हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया मेरी बात लिखलें कोई अमन नहीं होना। तबाही आनी ही आनी है। UNO को ख़त्म करें और कोई नई आर्गेनाईज़ेशन बना लें।

अन्य विभिन्न मामलों पर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बातचीत फ़रमाई Dr.Gysi की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ यह मुलाक़ात साढ़े पाँच बजे तक जारी रही। अंत में उन्हों ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

इसके बाद आदरणीय अमीर साहिब जर्मनी ने हुज़ूर अनवर के साथ दफ़्तरी मुलाक़ात की हुज़ूर अनवर ने कुछ मामलों में हिदायात दीं।

कार्यकर्ताओं का निरीक्षण और व्यवस्था

जलसा सालाना जर्मनी 2015 ई

आज प्रोग्राम के अनुसार जलसा गाह KARLSRUHE के लिए प्रस्थान था। छः बजकर बीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ पधारे और दुआ करवाई और क़ाफ़ला KARLSRUHE शहर के लिए रवाना हुआ। बेतुल-सबूह फ्रैंकफ़र्ट से KARLSRUHE की दूरी 160 किलोमीटर है। यह जगह जहां जलसा आयोजित होता है K. MESSE कहलाती है। इसका कुल रकबा एक लाख 50 हज़ार मुरब्बा मीटर है और इसका covered हिस्सा 70 हज़ार मुरब्बा मीटर है। इस में चार बड़े हाल हैं और ये चारों हाल एयर कंडीशन्ज़ हैं। प्रत्येक हाल का रकबा 1250 मुरब्बा मीटर और प्रत्येक हाल में कुर्सीयों पर 12 हज़ार लोग बैठ सकते हैं और प्रत्येक हाल में अठारह हज़ार से अधिक लोग नमाज़ अदा कर सकते हैं। संपूर्णता इन चारों हालों से जुड़े 128 शौचालय हैं। यहां दस हज़ार गाड़ियों की पार्किंग की जगह उपस्थित है।

लगभग एक घंटा चालीस मिनट की यात्रा के बाद आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ जलसा-ए-गाह तशरीफ़ लाए।

आदरणीय मुहम्मद इलयास मजूका साहिब अफ़्सर जलसा सालाना जर्मनी और आदरणीय हाफ़िज़ मुज़फ़्फ़र अहमद इमरान साहिब अफ़्सर जलसा गाह ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल को स्वागतम कहा और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इमारत के अंदर तशरीफ़ ले गए तो कार्यकर्ताओं ने बड़े पुरजोश ढंग में नारे लगाए।

इस के बाद जलसा सालाना के इंतिज़ामात का निरीक्षण शुरू हुआ। नायब आफ़सरान जलसा सालाना एक लाइन में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रेम पूर्वक उनके पास से गुज़रे और अपना हाथ बुलंद

करके अस्सलामु अलैकुम कहा। आरंभ में विभाग ख़िदमत-ए-ख़लक़, कार्ड चैकिंग सिस्टम और अफ़्सर साहिब जलसा सालाना और रिहायश मेहमानान बैरून जर्मनी के दफ़ातिर के थे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इन दफ़ातिर और विभागों के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया और उनके पास से गुज़रते हुए विभाग M.T.A में तशरीफ़ ले गए और यहां M.T.A के विभिन्न विभागों का निरीक्षण फ़रमाया

M.T.A जर्मनी ने इस वर्ष भी drone वीडीयो कैमरे का प्रयोग किया। यह कैमरा रीमोट कंट्रोल के माध्यम से आकाश में बुलंद होता है और इस के माध्यम जलसा के बाहरी दृश्य दिखाए जा सकते हैं।

मुंतज़मीन ने हुज़ूर अनवर की मौजूदगी में इस कैमरा को आकाश में उड़ाया और यह पर्याप्त बुलंदी पर ऊपर चला गया।

हुज़ूर अनवर ने M.T.A के प्रसारित प्रोग्राम और अन्य सम्बंधित मामलों के बारे में दरयाफ़त फ़रमाया और हिदायात से नवाज़ा।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल ने पुस्तकें के स्टोर और स्टॉल का निरीक्षण फ़रमाया। यहां बड़ी तर्तीब के साथ मेज़ों और विभिन्न स्टैंडज़ पर पुस्तकें रखी गई हैं ताकि पुस्तकें प्राप्त करने वाले आसानी के साथ अपनी उद्देशित पुस्तकें प्राप्त कर सकें।

निरीक्षण के मध्य विभाग ह्यूमैनिटी फर्स्ट के दफ़्तर में भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ तशरीफ़ ले गए और वहां पड़ी हुई विभिन्न चीज़ों और उनके प्रोग्रामों के बारे में चेयरमैन ह्यूमैनिटी फर्स्ट जर्मनी से हुज़ूर अनवर ने बातचीत फ़रमाई और वहां से कुछ चीज़ों खरीदीं और हिदायत से नवाज़ा।

विभाग जायदाद सौ मस्जिदों का भी हुज़ूर अनवर ने निरीक्षण फ़रमाया। यहां जर्मनी में बनने वाली विभिन्न मस्जिदों के मॉडलज़ रखे गए थे और इसी तरह मस्जिदों को बनाने में जो मटीरियल प्रयोग होता है इसके नमूने भी रखे गए थे।

इसी एरिया में विभाग वसाया, वक़्फ़ नौ, अमूर-ए-आमा, M.T.A और विभाग रिश्ता नाता के दफ़ातिर क़ायम किए गए थे।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्टोर में तशरीफ़ ले आए जहां खाने पीने और प्रयोग की विभिन्न चीज़ों स्टोर की गई थीं। यहां से आवश्यकता के अनुसार साथ-साथ ये चीज़ों विभिन्न विभागों को प्रदान की जाती हैं।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ उस हाल में तशरीफ़ ले गए जहां जलसा के मेहमानों के लिए खाना खिलाने का प्रबन्ध किया गया था। इस प्रबन्ध के तहत एक समय में हज़ारों लोग खाना खा सकते हैं मेज़ों पर ही पानी की बोतलें और गिलास इत्यादि रखे गए थे ताकि खाने के इस पानी के हुसूल के लिए कहीं दूसरी जगह न जाना पड़े।

शाम का खाना तैयार हो कर इस हाल में आ चुका था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक खाने के मयार का जायज़ा लिया। आलू गोश्त पका हुआ था। और साथ वहां नान भी रखे हुए थे जो मेहमानों को दिए जाने थे। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक आलू गोश्त प्लेट में डाला और एक लुक़मा खा कर इस बात का जायज़ा लिया कि यह सही तरह पका हुआ है या नहीं और सख़्त तो नहीं है। हुज़ूर अनवर साथ-साथ मुंतज़मीन को हिदायात भी फ़रमाते।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने लंगर ख़ाने का निरीक्षण फ़रमाया। सबसे पहले हुज़ूर अनवर ने गोश्त की कटाई, स्पलाई और गोश्त को स्टोर करने की जगह देखी। एक बहुत बड़ा फ्रीज़र है, जहां एक समय में 100 से अधिक बकरे एक विशेष टैमप्रेचर पर freez किए जा सकते हैं। लंगर ख़ाना के निरीक्षण के मध्य हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने खाना पका ने के इंतिज़ामात का जायज़ा लिया और खाने का मयार देखा। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक आलू गोश्त और दाल दोनों से एक-एक लुक़मा लेकर तनावुल फ़रमाया और खाने के मयार के बारे में मुंतज़मीन से बातचीत फ़रमाई।

लंगर ख़ाने के कार्यकर्ताओं ने नारे बुलंद किए और अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया।

लंगर ख़ाना के कार्यकर्ताओं ने एक बड़े साइज़ का केक तैयार किया हुआ था। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक अपने इन ख़ुद्दाम के लिए केक के विभिन्न हिस्से किए। लंगर ख़ाना के बाहर "देग वाशिंग मशीन" लगाई गई थी। यह मशीन पिछली आठ वर्षों से लगाई जा रही है। और प्रत्येक वर्ष इस में बेहतरी लाई जा रही है। आरंभ में यह अवस्था थी कि मशीन पर देग रखने के बाद एक बटन दबाना पड़ता था जिससे देग की धुलाई का फंक्शन शुरू होता था। परन्तु अब यह बटन दबाना नहीं पड़ता बल्कि जेसे ही देग रखी जाती है स्वयं ऑटोमैटिक फंक्शन शुरू हो जाता है। एक ऐसा सेंसर सिस्टम लगाया गया है जिस के कारण से स्वयं फंक्शन शुरू होता है। इसी तरह पहले एक समय में एक देग धुलती थी अब एक समय में दो देगें धुलती हैं।

लंगर ख़ाना और देग वाशिंग मशीन के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्राईवेट ख़ेमाजात के एरिया में तशरीफ़ ले आए और इंतिज़ामात का निरीक्षण फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ इन ख़ेमाजात के मध्यी रास्ता से गुज़रे। विभिन्न फ़ैमिलीयाँ अपने ख़ेमों के पास खड़ी थीं और कुछ ख़ेमे लगा रही थीं। सभी अपने हाथ बुलंद कर के हुज़ूर अनवर की सेवा में सलाम अर्ज़ किया। हुज़ूर अनवर प्रेम पूर्वक उनके सलाम का उत्तर देते और कुछ से बातचीत भी फ़रमाते। ख़ेमोंके विभिन्न साइज़ थे। कुछ ख़ेमे इतने बड़े थे कि उनमें दस से पंद्रह आदमी भी रह सकते हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ प्रेम पूर्वक एक ख़ेमा के क़रीब तशरीफ़ ले गए और इस का जायज़ा लिया कि कितने लोग इस में क़ियाम कर सकते हैं।

प्राईवेट ख़ेमाजात के सेहन के एक ओर एक हिस्सा प्राईवेट carvan के लिए विशेष किया गया था। हुज़ूर अनवर ने अफ़्सर साहिब जलसा सालाना से इस हिस्सा के बारे में और यहां दी जाने वाली सहूलयात के बारे में रिपोर्ट हासिल की।

इन ख़ेमाजात और carvan के एरिया के इर्दगिर्द फैंस लगाए गए हैं और गेट भी बनाए गए हैं और इस सेहन में रजिस्ट्रेशन कार्ड की चैकिंग और स्कैनिंग के बाद ही दाख़िल हुआ जा सकता है।

ख़ेमाजात के इस रिहायशी हिस्सा के निरीक्षण के मध्य सैंकड़ों ख़ानदानों ने अपने प्यारे आक़ा को इंतिहाई क़रीब से देखा। महिलाओं ने दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया और बरकतें पाई। प्रत्येक अपनी इस ख़ुशनसीबी और सआदत पर ख़ुश था।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ आठ बजकर 45 मिनट पर लजना के जलसा गाह में तशरीफ़ ले गए और लजना के इंतिज़ामात का निरीक्षण फ़रमाया और उनके समस्त इंतिज़ामात देखे और विभिन्न विभागों का जायज़ा लिया और हिदायात से नवाज़ा।

लजना जलसा के इंतिज़ामात के लिए नाज़िमे आला के अधीन 12 नायब नाज़मात आला हैं । इसी तरह विभिन्न विभागों के लिए नाज़मात की संख्या 70 है और नायब नाज़मात की संख्या 384 है। इसके अतिरिक्त मु'आविनात (महिला सहयोगियों) की संख्या 3716 है। इसी तरह संपूर्णता 4183 महिलाओं और बच्चियों ने लजना की ओर से डयूटी के कर्तव्यों को सरअंजाम दिए।

लजना के जलसा गाह के निरीक्षण के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मर्दाना जलसा गाह में तशरीफ़ ले आए। जहां प्रोग्राम के अनुसार जलसा सालाना की डयूटियों का उद्घाटन समारोह था। समस्त नाज़िमीन अपने अपने मुआवनीन और कार्यकर्ताओं के साथ अपने विभाग के नाम की तख़्ती के पीछे खड़े थे। अफ़्सर जलसा सालाना, अफ़्सर जलसा गाह और अफ़्सर ख़िदमते ख़लक़ के अतिरिक्त नायब आफ़िसरान की संख्या 21 है और विभिन्न विभागों के नाज़िमीन की संख्या 113 है और नायब नाज़मीन की 560 और मुआवनीन की संख्या 7154 है।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :

1800 103 2131

(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)

Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 3 June 2021 Issue No.22

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

पृष्ठ 1 का शेष

पहले

दुनिया की चापलूसी

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब लिखते हैं

मैंने कई बार अपने प्रिय मुर्शिद सय्यदुल औलीया ईसा मौऊद अलैहिस्सलाम की पवित्र ज़ुबान से सुना है। आप फ़रमाते हैं

"हम इस पर सामर्थवान हैं कि ऐसी तक़रीरें करें और ऐसी लेखनियां प्रकाशित करें कि लोगों को तबीयतें सम्पूर्ण मैत्री के ढांचा में ढली हुई हों और सब जातियां आपसी मतभेदों से ख़ुश हो जाएं और हुक्काम और प्रजा में से किसी को भी कभी उन पर आलोचना का अवर न मिल सके, परन्तु इस अपमानित संसार को ख़ुश करके अपने ख़ुदा की धुतकारने की ताक़त हम कहाँ रख सकते हैं।'

समाप्त होने वाला सप्ताह 11 अगस्त 1899 ई

कई लोग हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सेवा में दुआ के लिए लिखा करते थे। जिसके उत्तर में उनको लिखा जाता था। कि दुआ की गई,परन्तु इसके बाद वे दुबारा लिख दिया करते कि"कुछ लाभ नहीं हुआ। और यह दो अवस्थाओं से ख़ाली नहीं। पहली मानो आपने दुआ नहीं की अथवा यदि की है तो ध्यान से नहीं की।"

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने एक दिन निवेदन किया तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया

दुआ की वास्तविकता

"सख़्त ज़रूरत मालूम होती है कि दुआ के विषय पर फिर क़लम उठाया जाए और पहले निबन्ध काफ़ी साबित नहीं हुए। दुआ बहुत नाज़ुक मामला है इसके लिए शर्त है कि दुआ करवाने वाले और दुआ करने वाले में ऐसा दृढ़ सम्बन्ध हो जाए कि इस का दर्द उसका दर्द हो जाए और उस की ख़ुशी उसकी ख़ुशी हो जाए। जिस तरह दूध पीने वाले बच्चा का रोना माँ को अपने आप व्याकुल कर देता है और इस की छातियों में दूध उतर आता है,वैसे ही दुआ करने वाले की व्याकुल करने वाली हालत और इस्तिग़ासा पर दुआ करने वाला सरासर रिक़्क़त और हिम्मत वाला बन जाए।

ध्यान और वेदना भी ख़ुदा तआला के यहाँ से नाज़िल होती है

फ़रमाया मूल बात यह है कि यह सब मामले ख़ुदा तआला की तरफ से प्रदान की गई हैं स्वंय की चेष्टा को उनमें दख़ल नहीं। ध्यान और रिक़्क़त भी ख़ुदा के यहाँ से नाज़िल होती है। जब ख़ुदा चाहता है कि किसी के लिए सफलता का मार्ग निकाल दे परन्तु माध्यमों के सिलसिला में ज़रूरी होता है कि दुआ करे वाले को कोई बहुत तेज़ हरकत दे सकने वाला हो। इस की कोशिश बजुज़ उसके नहीं कि दुआ करने वाली अपनी हालत ऐसी बनाए कि व्याकुलता दुआ करने वाले को उस की तरफ़ ध्यान हो जाए।'

दुआ और धर्म की सेवा

फ़रमाया। "जो हालत मेरे ध्यान को खींचती है और जिसे देखकर मैं दुआ के लिए अपने अंदर तहरीक पाता हूँ। वह एक ही बात है कि मैं किसी व्यक्ति को मालूम कर लूं कि यह धर्म की सेवा के सज़ा पा रहा है और इस का वजूद ख़ुदा के लिए ,ख़ुदा के रसूल के लिए, ख़ुदा की किताब के लिए और ख़ुदा के बंदों के लिए लाभदायक है। ऐसे व्यक्ति को जो कष्ट तथा तकलीफ पहुंचे वह वास्तव में मुझे पहुंचता है।" फ़रमाया। "हमारे दोस्तों को चाहिए कि अपने अपने दिलों में धर्म की सेवा की नीयत बांध लें। जिस तरीक़ा और रूप से सेवा जिससे हो सके करे।" फिर फ़रमाया "मैं सच सच कहता हूँ कि ख़ुदा तआला के निकट सम्मान वाला वह व्यक्ति है जो धर्म का सेवक और लोगों के लिए लाभ पहुंचाने वाला है। वर्ना वह कुछ परवाह नहीं करता कि लोग कुत्तों और भेड़ों की मौत मर जाएं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 253 से 260 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

आँखों वाले।

هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمَاتُ وَالنُّوْرُ इसी तरह फ़रमाया अंधकार और नूर का भी कोई मुक़ाबला नहीं। थोड़ी सी रोशनी सारे कमरे का अंधेरा समाप्त कर देती है। अंधकार नूर के न होने का नाम है और नूर वजूद का। और वजूद के सामने अभाव की हैसियत ही क्या है। अर्थात तुम्हारे पास इलाही तालीम नहीं उसके पास है। अत: तुम्हारा और उसका क्या मुक़ाबला। उसकी तालीम की बुनियाद तो वास्तविकता पर है और तुम्हारी तालीम की बुनियाद सिर्फ़ जहालत और इंकार पर।

اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ۔ यह बात मुशरिकीन के सामने बतौर आरोप के प्रस्तुत की गई है अर्थात तुम अतिरिक्त मुशरिक होने के भी यह कहने का साहस नहीं कर सकते कि झूठे उपस्यों ने कोई वस्तु पैदा की है और वह ख़ुदा की पैदा की गई वस्तुओं के समान है। इस लिए मक्का के मुशरिकीन इस बात का साहस नहीं कर सके। जबकि कुछ और देशों के मुशरिक अपने उपास्यों के सम्बन्ध में ऐसे दावे भी पेश करते हैं। अफ़सोस मुसलमानो ने भी इस ज़माना में ऐसी बात कहनी शुरू कर दी है और हज़रत मसीह को परिंदों का पैदा करने वाला ठहरा दिया है और कुछ ने तो यहां तक कह दिया कि अब पता नहीं लग सकता कि अल्लाह तआला के बनाए हुए परिंदे कौन से हैं और हज़रत मसीह के बनाए हुए कौन से।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाया करते थे कि मैंने एक मौलवी से पूछा कि तुम जो दावा करते हो कि हज़रत मसीह परिंदे पैदा किया करते थे आख़िर उन्होंने क्या चीज़ पैदा की थी तो उसने जवाब दिया कि चमगादड़। जब मैंने उस से पूछा कि मसीह की चमगादड़ें कौन सी हैं और ख़ुदा की बनाई हुई चमगादड़ें कौन सी हैं तो उन मौलवी-साहब ने फ़रमाया अब पता नहीं चलता और पंजाबी में कहा कि "ओ हुन रल मिल गए ने'' अर्थात अब तो वे ख़ुदा तआला की बनाई हुई चमगादड़ों से मिल-जुल गई हैं।

अफ़सोस कि जिस बात का साहस मक्का के मुशरिकों को नहीं हुआ वह काम मुस्लमानों ने किस दिलेरी से किया, और नहीं सोचा कि इस बे दलील दावा को कौन स्वीकार करेगा।

(तफ़सीर कबीर, भाग 3 पृष्ठ 402 प्रकाशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad